दशनामी गोस्वामी व हिन्दु पुनरूत्थान एक अवलोकन

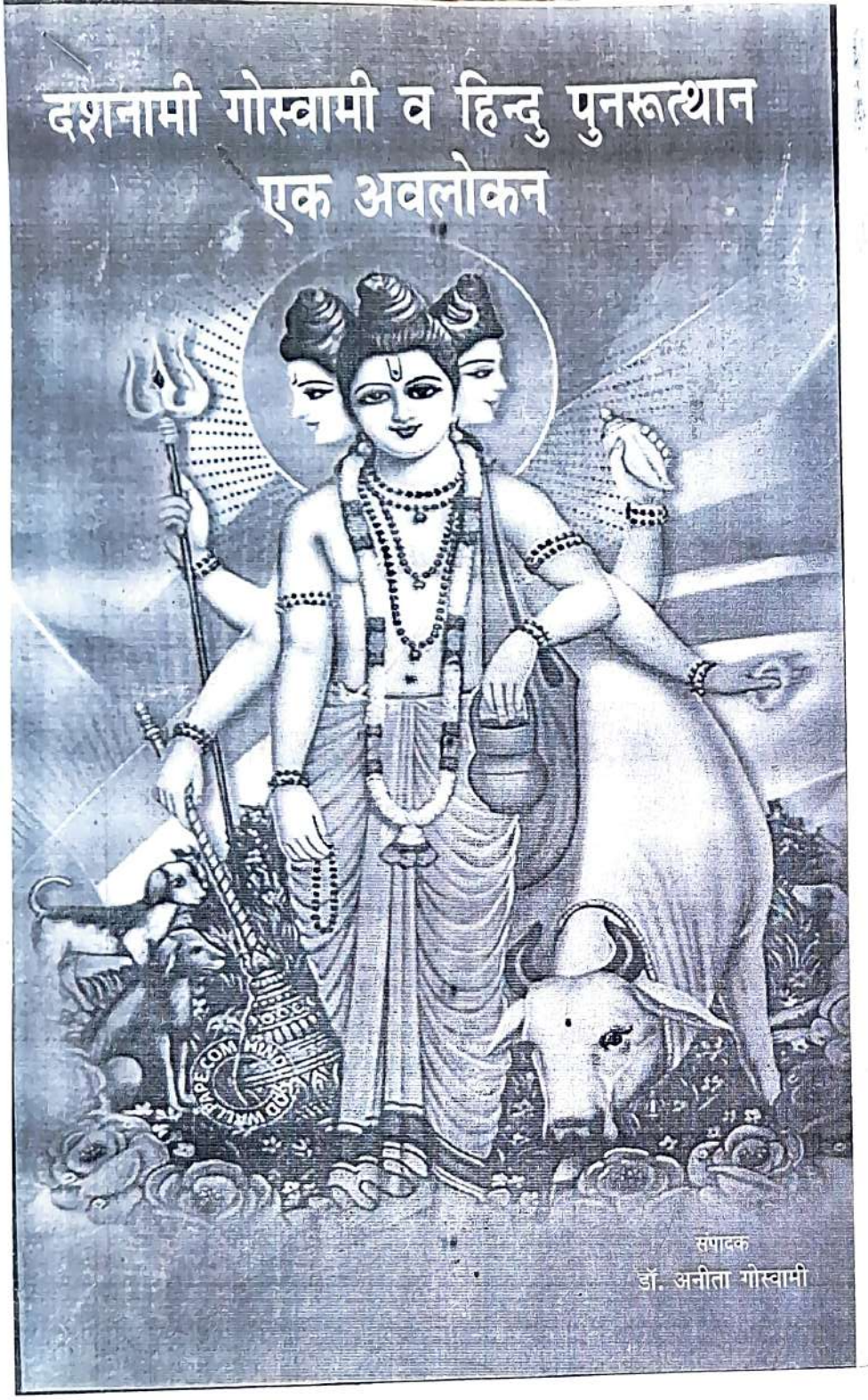

सम्पादक
डॉ. अनीता गोस्वामी

(1)

2019-20

Principal
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

Dr. S.R.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

- *प्रकाशक :*
  श्री सिद्धि विनायक ग्रुप ऑफ इंस्टीटयूशन्स, मेरठ
  खामा पब्लिशर्स, नई दिल्ली

- © लेखक एवं संपादक

- **प्रथम संस्करण 2019**
- आईएसबीएन : 978-81-85495-56-9
- **मूल्य : ₹ 150.00**
- *लेजर टाईप-सैटिंग :*
  सुपर कम्प्यूटर्स, मेरठ
  ✆ : 9927444145
- *मुद्रक :* जी. एस. ऑफसेट
  एन. शाहादरा, दिल्ली-३२

Dr. S.P.S. Ran
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. Coll
Meer

विषय-सूची

क्र०सं०		पृष्ठ संख्या
1.	शंकराचार्य जीवन एवं कृतीत्व *डॉ० अनीता गोस्वामी*	1—7
2.	गोस्वामी वंशावली का इतिहास *श्री जयराम गिरि*	8—45
3.	भारत में तपश्चर्या परंपरा का उदय एवं स्थापना : एक विवेचन *डॉ० अनीता गोस्वामी*	46—56
4.	जीवनोपयोगी मंत्र संग्रह *श्री कृष्ण चैतन्य ब्रह्मचारी*	57—88

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

(2)

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत

Principal
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

डॉ. राधा रानी

Dr. S.RS. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्यार्य..... 9-26

भूमिका-संगीत एवं सौन्दय

सौन्दर्य की परिभाषा

सौन्दर्य के सम्बन्ध में पाश्चातय विचारकों के मत

सौन्दर्य के सम्बन्ध में भारतीय विचारकों के मत

सौन्दर्य एव कला का सम्बन्ध

कला की व्युत्पत्ति

कला की परिभाषा

कला के तत्व

ललित कलाएँ

ललित कलाओं में संगीत की सर्वश्रेष्ठता

द्वितीय अध्याय..... 27-106

उत्तर भारतीय संगीतात्मक विधाएँ

शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, व सुगम संगीत

एवं उनमें प्रयुक्त सहायक वाद्य

शास्त्रीय संगीत का शाब्दिक अर्थ

संगीत में भाव

संगीत में कला

शास्त्रीय संगीत की गायन शैलियाँ

सुगम संगीत का अर्थ

सुगम संगीत का क्रमिक विकास क्रम

सुगम संगीत में वैज्ञानिक अविष्कारों एवं तकनीकियों का योगदान

सुगम संगीत की प्रमुख विधाएँ

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. Colle
Meerut

फिल्म संगीत
उत्तर भारतीय संगीतात्मक विधाओं में वाद्य

तृतीय अध्याय.....107-148
शास्त्रीय संगीत की विधाओं में सहायक
वाद्यों की भूमिका का सौन्दर्यात्मक विश्लेषण
शास्त्रीय संगीत में लय व ताल की भूमिका
शास्त्रीय संगीत में तत् व सुषिर वाद्यों की भूमिका
शास्त्रीय संगीत में रस व भाव की दृष्टि से सहायक वाद्यों का प्रयोग का विश्लेषण
शास्त्रीय संगीत में कला पक्ष की दृष्टि से सहायक वाद्यों के प्रयोग का विश्लेषण

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

Books (3)

Contemporary Dimensions

Literature, Social Media and Rethinking Gender

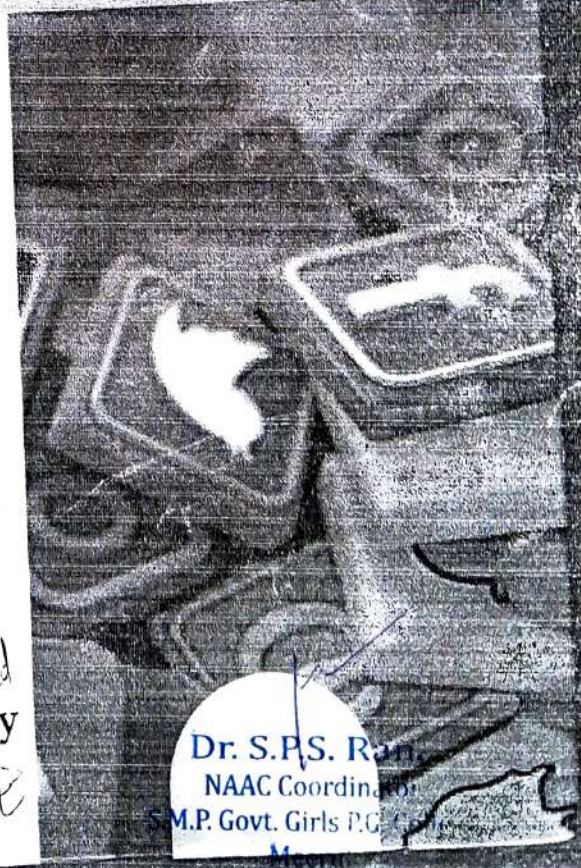

Dr. Usha Sawhney

Principal
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

Publishers

University Book House (P) Ltd.
79, Chaura Rasta, Jaipur-302 003
Ph. : 0141-2311466, 2313382 Fax : 0141-4013697
email : uni_bookhouse@yahoo.com

ISBN : 978-81-8198-495-1

First Edition : 2019

© Author

Laser Typesetting & Printed at:
UBH & Trident Enterprises Delhi

All right reserved. No part of this work may be copied, adapted, abridged or translated, stored in any retrieval system, computer system, photographic or other system or transmitted in any form by any means whether electronic, mechanical, digital, optical, photographic or otherwise without a prior written permission of the copyright holders. M/s University Book House (P) Ltd., Jaipur.

This book is sold subject to the condition that it, or any part of it, shall not by way of trade or otherwise, be sold, re-sold, displaying, advertised, or otherwise circulated, without the publisher's prior written consent, in any form of binding, cover or title other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser(s).

Any breach of any of these rights or conditions will entail civil and criminal action without further notice.

While every effort has been made to avoid any mistake or omission, this publication is being sold on the condition and understanding that neither the author nor the publishers or printers would be liable in any manner to any person by reason of any mistake or omission in this publication or for any action taken or omitted to be taken on advice rendered or accepted on the basis of this work.

Rights of Publication reserved with the Publishers.

CONTENTS

Preface
Foreword
Introduction

SECTION I - LITERATURE

1. Wordsworth's Poetry : A Tool to Shower Peace to the Mind 1
2. A Human behind the Aura of a King: Richard II 9
3. Female Gender: A Role Model of Divinity 18
4. Irrespective of difference in Era, Language and Expression: Love Possess Same Soul Worldwide 25
5. Progression in the Status of female Gender by Shashi Deshpande 32
6. Chetan Bhagat as a Popular Fiction Writer: Identity Issues of the Characters 38
7. Jane Austen's Women Characters in Context to Women Empowerment 47
8. Utilization of Education to Curb the Burning Issues 54

SECTION II - SOCIAL MEDIA & ICT

9. Impact of Literature on Media and Vice - Versa 59

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

(4)

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में गुरूकुल शिक्षा पद्धति का महत्व

नालंदा प्रकाशन
दिल्ली

Principal
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. Coll
Meerut

गुरूकुल शिक्षा पद्धति का ऐतिहासिक सन्दर्भ 72
पूजा गुप्ता

13. गुरूकुलीय शिक्षा एवं आधुनिक शिक्षा पद्धति : एक विश्लेषण 82
डॉ. आर.सी.सिंह

14. गुरूकुल शिक्षा पद्धति एंव आधुनिक शिक्षा प्रणाली का तुल्नातमक अध्ययन 86
डॉ. रेनूराघा

15. गुरूकुल शिक्षा प्रणाली आधुनिक शिक्षा प्रणाली से कैसे भिन्न है एक विश्लेषण 94
डॉ. पुनीता शर्मा

16. आधुनिक शिक्षा प्रणाली व गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन'' 99
डॉ. पवन कुमार
शिल्पी रानी

17. महिला सशक्तिकरण: भारतीय उच्च शिक्षा के विकास के सन्दर्भ में 104
डॉ. बलजीत कौर

18. गुरूकुल शिक्षा पद्धति एवं आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक की भूमिका 113
डॉ. जितेन्द्रकुमार सिंह

19. स्वस्थ्य लोकतंत्र के विकास में नैतिक मूल्य निभा सकते हैं महत्वपूर्ण भूमिका 120
डॉ. जया नैथानी

20. भारतीय प्राचीन शिक्षा व्यवस्था तथा दयानन्द सरस्वती के द्वारा वैदिक शिक्षा-संस्कृति का पुनर्रुद्धार 124
मुकेश चौधरी
अंशु त्यागी

21. गुरूकुल शिक्षा पद्धति भारतीय संस्कृति की पोषक: एक अवलोकन 132
डॉ. कविता वर्मा

22. वर्तमान समय में गुरूकुल शिक्षा पद्धति की प्रांसगिकता 138
गुड्डी बाला

23. महाभारतकालीन गुरूकुलीय शिक्षा में पर्यावणीय जागरूकता 142
गौतम

24. नैतिक मूल्य: हमारी पहचान 147
श्रीमती रंजिता उनियाल

25. वर्तमान परिस्थितियों में गुरूकुल शिक्षा प्रणाली की प्रासंगिकता: एक दार्शनिक धारणा 151
राजीव कुमार

Dr. S.P.S. Rai
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G.
Meerut

13.

गुरूकुलीय शिक्षा एवं आधुनिक शिक्षा पद्धति : एक विश्लेषण

डॉ. आर.सी. सिंह *

देश का विकास और उन्नति तब ही हो सकती है जब शिक्षा व्यवस्था सही हो क्योंकि शिक्षा जीवन में सफल होने और कुछ अलग करने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है। सा विद्या या विमुक्तये के सुत्रा का अनुसरण करते हुए हमारे देश में शिक्षा को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। हमारे भारत में गुरूकुल परम्परा सबसे पुरानी व्यवस्था है। गुरूकुलम वैदिक युग से ही अस्तित्व में है। प्राचीन काल में गुरूकुल शिक्षा पद्धति से ही शिक्षा दी जाती थी। भारत वर्ष में अनादि काल से ही करोड़ों विद्यार्थी गुरूकुल शिक्षा पद्धति से अध्ययन करते रहे हैं। भारत को विश्व गुरू इस पद्धति के कारण ही तो कहा जाता था। अब इस परम्परा का अस्तित्व समाप्त होता जा रहा है। किस प्रकार से पहले शिक्षा दी जाती थी और आज के युग की आधुनिक शिक्षा गुरूकुल पद्धति से कैसे भिन्न है। यही इस विश्लेषण का महत्वपूर्ण बिन्दु है।

गुरूकुल का अर्थ है वह स्थान या क्षेत्र जहाँ गुरू का कुल यानी परिवार निवास करता है। प्राचीन काल में शिक्षक को ही गुरू या आचार्य मानते थे और वहाँ शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों को उसका परिवार माना जाता था। गुरूकुल का मुख्य उद्देश्य ज्ञान विकसित करना और शिक्षा पर अत्यधिक ध्यान केन्द्रित करना होता था।

* अति. प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, शहीद मंगल पाण्डे राजकीय महिला स्नाo महाविद्यालय, मेरठ।

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

(5)

Principal
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

SUSTAINABLE AGRICULTURE

Dr. Shivani Srivastava

Prof. Anuradha Tiwari

Dr. Kranti Singh

Publisher
Shrinkhala Publishing House
Khan Market (Opp. Petrol Pump)
Near Avadh University,
Ayodhya (U.P.) 224001
Mob. 9838320095

E-mail: shrinkhalapublishinghouse@gmail.com

© **Dr. Shivani Srivastava**

Rs. : 850.00

ISBN : 978-93-87548-14-5

First Edition : 2019

Type Setting
Khusi Computer's
9936539757

Printed : Ashish Printers, Delhi

Editional Board

1. Richa Singh

2. Dr. Sharad Vaish

3. Dr. Vineeta Lal

4.Dr. Ragvendra Pratap Narayan

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

13. Biological Control of Pests for Beneficial Agricultur and Better Environment - **Dr. Shilpy Shakya** 131
14. Bio-prospecting the plant growth promoting micro-inoculants to reduce chemical fertilizers and fluoride concentration in integrated and sustainable manner **-Md. Shahbaz Anwar, Mona Upadhyay, Nazia Firdous, Vandana Nigam** 138
15. Sustainable Agriculture And Allied Sectors **- Dr. Anshu Gupta** 155
16. Role of Plant Science in Sustainable Development, Environmental Education, and Biodiversity Conservation - **Dr. Richa Pandey** 160
17. Analysis of Social Empowerment of Women Through Shgs In Allahabad District of U.P. **-Arti Singh, Sanghamitra Mohapatraa** 165
18 किसानों की दोगुनी आय के लिए सतत् कृषि विकास **-Punj Bhaskar** 171

ALLIED SECTOR :

1 Use of Preservatives in Foods Effect The Human Health - **Dr. Archana Maurya** 181
2 Health Care Systemand Use of Contraceptives in Rural Uttar Pradesh - **Dr. Deepti Khare** 186
3 Menstrual Hygience, Management : Practices and Challenges Faced by Females - **Dr. Rashmi Bishnoi** 193
4 "Sustainable Development : Strategies and Emerging Trends" Socio-Economic Sustainability **-Dr. Navneeta Singh, Ms. Sonal Soni** 205
5 Impact of Mid-Day Meal Scheme on Health Status of Children Benefited from Government Primary Schools of Kanpur - **Dr. Nirmala Singh** 222
6 Sports - In Pursuit of Sustainable Development **-Dr. Swatendra Singh, Dr. Poonam Bhandari** 228
7 Sarathi Development Foundation - **Zaibun Nisa** 234
- **List of Contributors** 249

Doubling Farmers' Income: A Possibility or a Political Gimmick

□ **Dr. Bhanu Shankar**

India has completed 70 years of Independence, a period witnessing the overall growth and development of the economy. The process of industrialization which accelerated during the post Independence period and the consequent growing urbanization and consumerism has definitely led the economy to "Take off" stage during 1960s. The second major stride towards development kick started with the implementation of the historic New Economic policy in 1991. There is no denying the fact that both the manufacturing and services sector got a boost up and registered impressive growth after getting liberated from the shackles of license quota raj of the government but, the truth still remains that the agriculture sector is still struggling for the mercy and suppor of the state. Indian farmers arguably remain among the most unfree in the world.

Some thinkers argue that India will not be able to feed itself without the government playing a supportive role in agriculture. But agricultural production and productivity has

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

शारीरिक शिक्षा में जैव यान्त्रिकी और पेशीय गति विज्ञान

डॉ. स्वतेन्द्र सिंह
डॉ. पूनम भंडारी

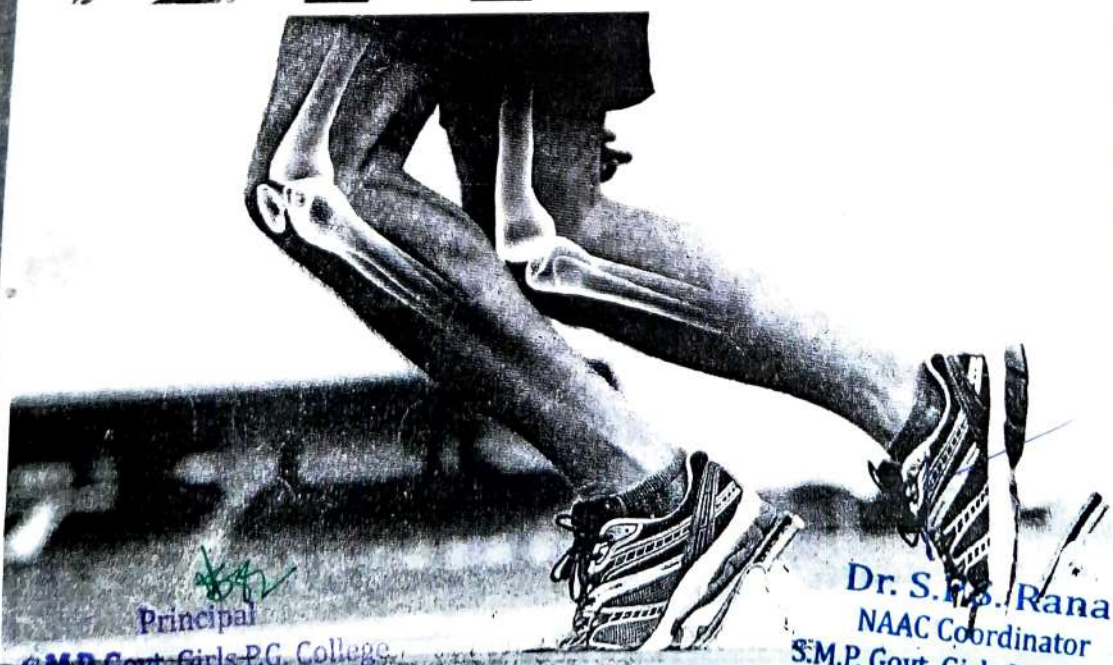

Principal
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

Dr. S.K.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

प्रकाशक

खेल साहित्य केन्द्र

7/26, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली - 110002
Ph.: (O) 011-43551324, 42564726, 47090343
(M) 9811088729, (Fax) 011-42564726
(Res.) 011-47091605
E-mail: khelsahitya1@rediffmail.com
Website: www.khelsahitya.com, www.kskpublisher.com

© 2019 सर्वाधिकार सुरक्षित

अ.मा.पु.सं. - 978-93-88159-90-6

भारत में प्रकाशित 2019

इस पुस्तक के किसी भी अंश का पुनरुत्पादन या किसी प्रणाली के सहारे पुनर्प्राप्ति के प्रयास अथवा किसी भी तकनीकी तरीके - इलैक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या वेब माध्यम से प्रकाशक की अनुमति के बिना प्रकाशित एवं वितरित नहीं किया जा सकता है। प्रकाशक ने अपने प्रयास से इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्रोतों से प्राप्त किया है। पुस्तक में प्रकाशित किसी भी सूचना की सत्यता के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए प्रकाशक, सम्पादक, लेखक अथवा मुद्रक जिम्मेदार नहीं है।

सभी प्रतिवाद का न्यायिक क्षेत्र 'दिल्ली' होगा।

Printed by:
ASIAN OFFSET PRINTERS
Delhi

Laser Typesetting by:
के.एस.के. डी.टी.पी. यूनिट, दिल्ली

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

प्रकाशक

खेल साहित्य केन्द्र

7/26, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली - 110002
Ph.: (O) 011-43551324, 42564726, 47090343
(M) 9811088729, (Fax) 011-42564726
(Res.) 011-47091605
E-mail: khelsahitya1@rediffmail.com
Website: www.khelsahitya.com, www.kskpublisher.com

© 2019 सर्वाधिकार सुरक्षित

अ.मा.पु.सं. - 978-93-88159-90-6

भारत में प्रकाशित 2019

इस पुस्तक के किसी भी अंश का पुनरुत्पादन या किसी प्रणाली के सहारे पुनर्प्राप्ति के प्रयास अथवा किसी भी तकनीकी तरीके - इलैक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या वैध माध्यम से प्रकाशक की अनुमति के बिना प्रकाशित एवं वितरित नहीं किया जा सकता है। प्रकाशक ने अपने प्रयास से इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्रोतों से प्राप्त किया है। पुस्तक में प्रकाशित किसी भी सूचना की सत्यता के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए प्रकाशक, सम्पादक, लेखक अथवा मुद्रक जिम्मेदार नहीं है।

सभी प्रतिवाद का न्यायिक क्षेत्र 'दिल्ली' होगा।

Printed by:
ASIAN OFFSET PRINTERS
Delhi

Laser Typesetting by:
के.एस.के. डी.टी.पी. यूनिट, दिल्ली

अनुक्रम

इकाई (Unit)-1 1-35

पेशीय विज्ञान (Kinesiology), पेशीय विज्ञान के उद्देश्य (Aims of Kinesiology), अक्ष और तल (Axis and Plane), शरीर की मुख्य पेशियाँ, शारीरिक शिक्षा का पेशीय विज्ञान/ गति विज्ञान में महत्त्व ।

इकाई (Unit)-2 36-73

पेशीय विज्ञान में मूलभूत संचलन, शरीर संधियां (Body Joints), संधियों की गतियाँ (Movements of Joints), यकृत (Liver), बल (Force), गति के नियम (Law of motion) ।

इकाई (Unit)-3 74-114

जैव यांत्रिकी विज्ञान (Biomechanics), जैव यांत्रिकी विज्ञान में अक्ष और तल (Axes and Planes), मानव की शरीर रचना का फंडामेंटल: संतुलन और गति, अंगविन्यास (Posture), गति (Speed), वेग (Velocity), त्वरण (Acceleration), संवेग (Momentum) ।

इकाई (Unit)-4 115-167

गति के प्रकार, गति के नियम, बल (Force), बल की इकाइयों (units of force), बल के प्रकार, गुरुत्वाकर्षण बल, गुरुत्वकेंद्र (center of gravity), घर्षण बल, बल का प्रभाव, बल का क्षण (Moment of Force), जड़त्वाघूर्ण (Moment of

Dr. S.P.S. Ra...
NAAC Coordinato...
S.M.D.Govt. Girls P.G. ...
Meer...

डॉ. पूनम भंडारी भारत के सर्वश्रेष्ठ शारीरिक शिक्षा संस्थान "लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा संस्थान (एल.एन.आई.पी.ई.), ग्वालियर" की प्रतिभावान् विद्यार्थी रही है, जिन्होंने अपनी बी.पी.ई., एम.पी.ई. तथा एम.फिल. (शारीरिक शिक्षा) की शिक्षाएँ इसी ऐतिहासिक शारीरिक शिक्षा संस्थान से पूर्ण की है। इन्होंने 'डॉक्टर ऑफ फिलॉसॉफी इन फिजीकल एजुकेशन' (पी.एच.डी.) की उपाधि सी.एम.जे.यू., शिलांग, मेघालय से प्राप्त की है। इन्होंने यू.जी.सी. नेट की परीक्षा भी सफलतापूर्वक उत्तीर्ण की है।

डॉ. पूनम भंडारी ने अपने महाविद्यालीय जीवन में कई खेलकूद प्रतियोगिताओं में सक्रिय रूप से प्रतिभाग किया है।

डॉ. पूनम भंडारी ने शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद के क्षेत्र में 12 शोध पत्रों को राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलनों तथा सेमिनारों में प्रस्तुत किया है। इन्होंने शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद के क्षेत्र में चार शोध पत्रों को राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं में प्रकाशित भी किया है।

वर्तमान में **डॉ. पूनम भंडारी** सहायक प्रोफेसर (शारीरिक शिक्षा) के पद पर शहीद मंगल पांडे गर्वनमेंट गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, माधवपुरम, मेरठ, उत्तर प्रदेश में कार्यरत है।

***

शारीरिक शिक्षा और खेलकूद में शरीर रचना विज्ञान और शरीर क्रिया विज्ञान की आवश्यकता और महत्त्व के बारे में प्रकाश डालने से पहले हमें यह जानना जरूरी है कि खेलकूद और शारीरिक शिक्षा में हम किस चीज का प्रयोग करते हैं सामान्यतः उत्तर यहीं होता है कि खेलकूद में मानव शरीर का उपयोग करते हैं। मानव शरीर द्वारा ही खेलकूद, व्यायाम आदि शारीरिक क्रियायें होती हैं। इसका तात्पर्य यह है कि खेलकूद व शारीरिक क्रियायें मानव शरीर के बिना नहीं की जा सकती है। मानव शरीर की संरचना एवं क्रियाओं का अध्ययन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि शरीर रचना विज्ञान और शरीर क्रिया विज्ञान (Anatomy and Physiology) एक दूसरे के पूरक है। इस विषयों के बिना हम खेलकूद व शारीरिक शिक्षा की कल्पना नहीं कर सकते।

प्रस्तुत पुस्तक "शारीरिक शिक्षा में शरीर रचना तथा क्रिया विज्ञान" में शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में शरीर रचना तथा क्रिया विज्ञान से सम्बन्धित सभी आवश्यक तथ्यों, अवधारणाओं पर चर्चा सचित्र प्रस्तुत की गयी है। प्रस्तुत पुस्तक को बी.एस.सी./बी.ए. प्रथम वर्ष, सत्र 2018–19 के नवीनतम् पाठ्यक्रम के अनुसार लिखा गया है। अतः आशा की जाती है कि प्रस्तुत पुस्तक बी.एस.सी./बी.ए. (शारीरिक शिक्षा) के विद्यार्थियों व अध्यापकों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

निपुण प्रकाशन
पब्लिशिंग डिविजन- भगवती पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स
सी–8/77–बी, केशव पुरम, (लारेन्स रोड),
निकट केशव पुरम मेट्रो स्टेशन, नई दिल्ली-110035
फोनः 011-43598194, 0-9911151534, 0-9711924754
ई-मेलः dkjain95@gmail.com / dkjain77b@gmail.com

₹ 300.00
ISBN: 978-93-86621-34-4

ारीरिक शिक्षा में
ारीर रचना तथा
क्रिया विज्ञान

atomy and Physiology
Physical Education)

नम भंडारी

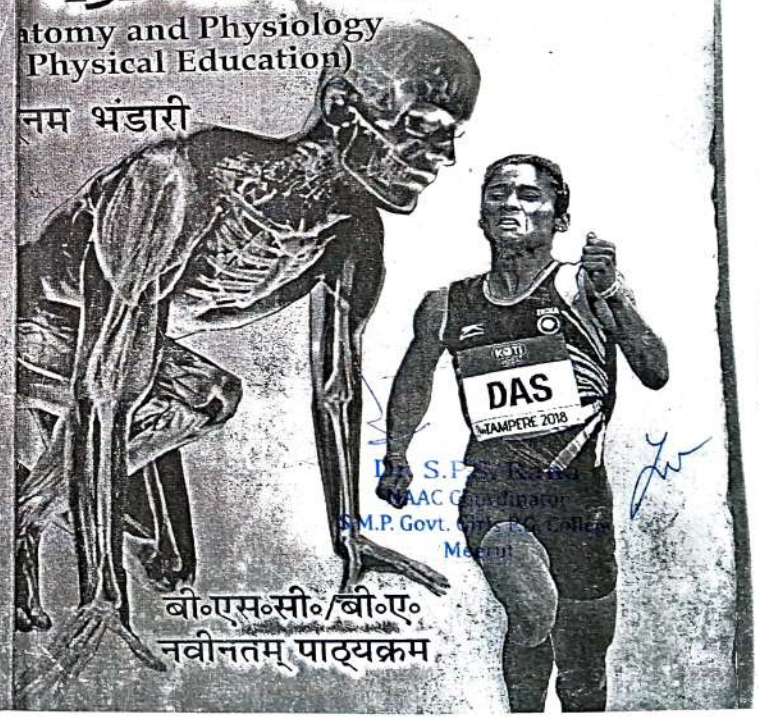

बी०एस०सी०/बी०ए०
नवीनतम् पाठ्यक्रम

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

प्रकाशन द्वारा:
निपुण प्रकाशन
पब्लिशिंग डिवीजन: **भगवती पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स**
सी-8/77-बी, केशव पुरम्, (लारेंस रोड़), शुक्र बाज़ार रोड़,
नई दिल्ली - 110035 फोन : 011-43598194
मोबाईल- 0-9911151534, 0-9711924754
ई-मेल: dkjain95@gmail.com / dkjain77b@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2019

© 2019 प्रकाशक

अ0मा0पु0सं0 - 978-93-86621-34-4

भारत में प्रकाशित 2019

इस पुस्तक के या इसके किसी खण्ड के अनुवाद, पुनर्मुद्रण अथवा पुर्नप्रकाशन का सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन हैं, अतिरिक्त किसी समीक्षात्मक उद्धरण के।

लेज़र टाइपसेटिंग द्वारा :
जैन मीडिया ग्राफिक्स, C-8/77-B, केशव पुरम्, (लारेन्स रोड़),
दिल्ली-110035 (फोन): 9711924754

मुद्रक:
ट्राइडेन्ट एन्टर्प्राइज़ीज
नई दिल्ली

मूल्य : 300/-

विषय-सूची

इकाई 1: शारीरिक शिक्षा 1-20

1. शरीर रचना तथा क्रिया विज्ञान का अर्थ तथा परिभाषा 1
2. शारीरिक शिक्षा और खेलकूद में शरीर रचना और शरीर क्रिया विज्ञान की आवश्यकता तथा महत्व 5
3. कोशिका, ऊतक, अंग तथा तन्त्र का अर्थ तथा परिभाषा 8
4. कोशिका की संरचना तथा कार्य 17

इकाई 2: कंकाल तथा मांसपेशीय तंत्र 21-51

5. अस्थियों के प्रकार तथा मानव शरीर की विभिन्न अस्थियों के नाम 21
6. जोड़ों के विभिन्न प्रकार तथा उनके आसपास होने वाली प्रमुख गतियाँ 35
7. कंकाल मांसपेशी की संरचना, वर्गीकरण तथा कार्य 45

इकाई 3: श्वसन तथा पाचन तंत्र 52-93

8. श्वसन का अर्थ एवं प्रकार तथा श्वसन तंत्र के प्रमुख अंग 52
9. श्वसन तंत्र के कार्य तथा वाइटल केपेसिटी और इसकी माप 59
10. श्वसन की क्रिया विधि 64
11. पाचन तंत्र का अर्थ, महत्त्व तथा प्रमुख अंग 69
12. पाचन तंत्र के कार्य, प्रक्रियाएं तथा कार्य विधि 84

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. Coll.
Meerut

वर्तमान समय में जहाँ भारत में साक्षरता दर में आशातित प्रगति हुई है। वही दूसरी ओर विश्व में हमारी शैक्षिक स्थिति को गिरता ग्राफ भी चिन्ता का विषय है। विश्व के शीर्ष 200 विश्वविद्यालयों में भारत के एक भी संस्थान का नाम नही सम्मिलित न होना हमारी शिक्षा व्यवस्था पर बड़ा प्रश्न चिन्ह लगाता है। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में 80 प्रतिशत स्नातक किसी काम लायक नहीं है। ऐसे समय में हमारी शैक्षिक नीतियां सवालों के घेरों में है हम एक ओर इसरो, DRDO जैसे संस्थानों के बल पर अन्तरिक्ष और रक्षा के क्षेत्रों में मजबूती से उभरे हैं। वही दूसरी ओर इन संस्थानों की आड में हम अपनी शैक्षिक विफलता को छुपा नही सकते, भारतीय शिक्षा पद्धति में अनेकानेक विसंगतियां और चुनौतियों मुह बाए खड़ी हैं। शिक्षा चन्द पूंजीपतियों और उद्योगपतियों के लिये एक कमाई का जरिया बनकर रह गयी है। ऐसे समय में हमे एक बार पुनः अपने स्वर्णिम अतीत की ओर देखना होगा जहाँ हमारी शिक्षा व्यवस्था समुचे विश्व के लिये आकर्षण और अनुकरण का केन्द्र रही गुरुकुल शिक्षा पद्धति में आज भी बहुत कुछ मूल्यवान और समायिक है। जिस पर हमें उदार मन से पुर्नमंथन करना होगा।

डॉ० नीशू कुमार का जन्म 01 जनवरी 1988 ग्राम लड्पुरा, जिला हापुड़, उत्तर प्रदेश में एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ आपकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव के विद्यालय से हुई। आप ने एम.ए., एम.फिल्., पी.एच.डी. की उपाधि चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, परिसर मेरठ के राजनीति विज्ञान विभाग से प्राप्त की। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित यू.जी.सी. नेट की परीक्षा उत्तीर्ण की। युवा राजनीति विज्ञानी के रूप में सक्रियता, 25 राष्ट्रीय संगोष्ठी, 7 अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में प्रतिभाग किया साथ ही दो राष्ट्रीय संगोष्ठीयों के संयोजक, एक राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजक सचिव रहें हैं साथ ही विभिन्न वर्कशॉप में प्रतिभाग किया।

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की डॉक्ट्रल फेलोशिप प्राप्त की और एक प्रोजेक्ट 'बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं' पर कार्य किया है, वर्तमान में आप आई.सी.एच.आर., नई दिल्ली से अनुदानित एक लघु शोध परियोजना "पं. दीनदयाल उपाध्याय के राजनीतिक चिन्तन का ऐतिहासिक विश्लेषणात्मक अध्ययन : एकात्म मानववाद के विशेष सन्दर्भ में" पर शोधरत हैं। आपके सम्पादन में राष्ट्रीय सामाजिक ज्वलन्त मुद्दो से सम्बद्ध कई पुस्तके भी प्रकाशित हो चुकी हैं जिसमें जम्मू कश्मीर जैसे विषय को लेकर "जम्मू कश्मीर में पाक प्रायोजित आतंकवाद", "तीन तलाक" जैसे महत्वपूर्ण विषय को लेकर तीन तलाक एक राजनीतिक एवं सामाजिक विमर्श, 21वीं सदी में महिला अधिकारों से सम्बद्ध, 21वीं सदी में महिला सुरक्षा समस्या एवं चुनौतियाँ विषय आदि पर पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उपर्युक्त पुस्तकों को अकादमी जगत में बहुत सराहना मिली है। आप विभिन्न सामाजिक एवं शैक्षिक समितियों के सदस्य के साथ साथ ही भारतीय राजनीतिक विज्ञान परिषद् के आजीवन सदस्य की सक्रिय भूमिका के रूप में कार्यरत आपके लेख भिन्न-भिन्न शोध पत्रिकाओं, जर्नल व संकलित पुस्तकों में प्रकाशित हो चुके है। आप राजनीति विज्ञान विषय के सहायक आचार्य के रूप में चमन लाल महाविद्यालय लण्ढौरा, रूड़की, हरिद्वार में कार्यरत है और महाविद्यालय में निरन्तर सेवाएँ दे रहे है।

अनामिका चौहान का जन्म ग्राम अम्बुवाला जिला, हरिद्वार, उत्तराखण्ड के मध्य वर्गीय परिवार में हुआ है आपकी प्रारम्भिक शिक्षा जनपद हरिद्वार में सम्पन्न हुई। आपने स्नातकोत्तर, अंग्रेजी, समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान और मास्टर ऑफ फिलोसफी की उपाधि गृह विज्ञान विषय से उत्तीर्ण की साथ ही आपने राष्ट्रीय शैक्षिक पात्रता परीक्षा (यू.जी.सी. नेट), यू.सेट गृह विज्ञान विषय में उत्तीर्ण की। आपकी पहचान एक युवा विज्ञानी और सक्रिय शिक्षिका के रूप में है। आपकी उपलब्धियों को देखते हुए मदरहुड विश्वविद्यालय, रूड़की हरिद्वार ने आपको शैक्षिक उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित भी किया है साथ ही उत्तराखण्ड राज्य परिषद् विज्ञान और प्रौद्योगिकी (Ucost Uttarakhand) ने भी आपको युवा विज्ञानी पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है। आप विभिन्न राष्ट्रीय संगोष्ठियों एवं संस्थाओं सक्रिय रूप से जुड़ी हुई है। पठन पाठन की संस्कृति में विशेष रूचि है। समय समय पर कई पत्र-पत्रिकाओं में विभिन्न विषयों से सम्बन्धित आपके शोध पत्र प्रकाशित होते रहे हैं। आप भारतीय विज्ञान कांग्रेस एसोसिएशन, कलकत्ता तथा होम साइंस एसोसिएशन इण्डिया की आजीवन सदस्य भी है।

वर्तमान में आप गृह विज्ञान विभाग के सहायक आचार्या के रूप में चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार में कार्यरत है।

प्रकाशन

₹1350

ISBN 978-81-942838-2-9

$ 72

www.absbooksindia.com

Principal
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में गुरुकुल शिक्षापद्धति का महत्व

डॉ. नीशू कुमार
अनामिका चौहान

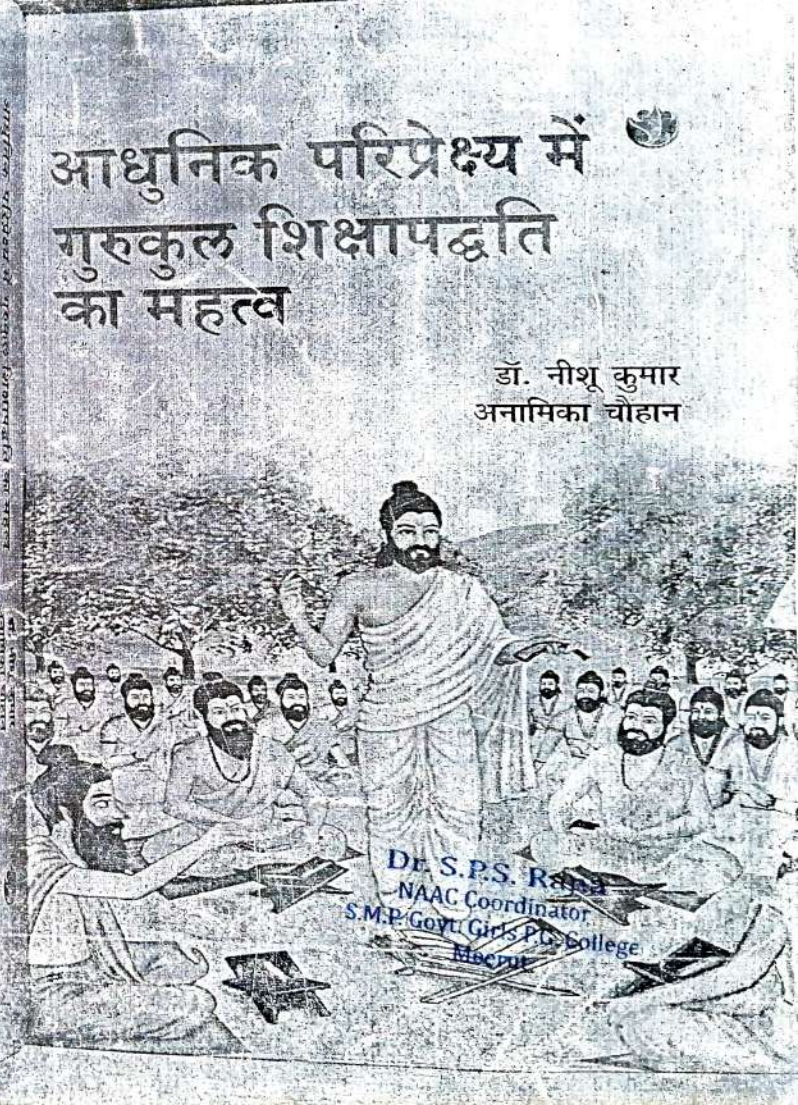

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P Govt. Girls P.G. College
Meerut

(8)

वर्तमान समय में जहाँ भारत में साक्षरता दर में अत्याशित प्रगति हुई है। वही दूसरी और विश्व में हमारी शैक्षिक स्थिति को गिरता ग्राफ भी चिन्ता का विषय है। विश्व के शीर्ष 200 विश्वविद्यालयों में भारत के एक भी संस्थान का नाम नही सम्मिलित न होना हमारी शिक्षा व्यवस्था पर बड़ा प्रश्न चिन्ह लगाता है। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत मे 80 प्रतिशत स्नातक किर्स. काम लायक नहीं है। ऐसे समय में हमारी शैक्षिक नीतियां सवालों के घेरों में है हम एक ओर इसरो, DRDO जैसे संस्थानों के बल पर अन्तरिक्ष और रक्षा के क्षेत्रों में मजबूती से उभरे है। वही दूसरी और इन संस्थानों की आड में हम अपनी शैक्षिक विफलता को छुपा नही सकते, भारतीय शिक्षा पद्धति में अनेकानेक विसंगतियां और चुनौतियों मुह बांए खड़ी है। शिक्षा चन्द पूंजीपतियो और उद्योगपतियों के लिये एक कमाई का जरिया बनकर रह गयी है। ऐसे समय में हमे एक बार पुनः अपने स्वार्णिम अतीत की और देखना होगा जहाँ हमारी शिक्षा व्यवस्था समुचे विश्व के लिये आकर्षण और अनुकरण का केन्द्र रही गुरूकुल शिक्षा पद्धति में आज भी बहुत कुछ मूल्यवान और समायिक है। जिस पर हमें उदार मन से पुनर्मंथन करना होगा।

डॉ0 नीशू कुमार का जन्म 01 जनवरी 1988 ग्राम लड्पुरा, जिला हापुड़, उत्तर प्रदेश में एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ आपकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव के विद्यालय से हुई। आप ने एम.ए., एम.फिल्., पी.एच.डी. की उपाधि चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, परिसर मेरठ के राजनीति विज्ञान विभाग से प्राप्त की। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित यू.जी.सी. नेट की परीक्षा उत्तीर्ण की। युवा राजनीति विज्ञानी के रूप में सक्रियता, 25 राष्ट्रीय संगोष्ठी, 7 अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में प्रतिभाग किया साथ ही दो राष्ट्रीय संगोष्ठीयों के संयोजक, एक राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजक सचिव रहें हैं साथ ही विभिन्न वर्कशॉप में प्रतिभाग किया।

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की डॉक्ट्रल फेलोशिप प्राप्त की और एक प्रोजेक्ट 'बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं' पर कार्य किया है, वर्तमान में आप आई.सी.एच.आर., नई दिल्ली से अनुदानित एक लघु शोध परियोजना "पं. दीनदयाल उपाध्याय के राजनीतिक चिन्तन का ऐतिहासिक विश्लेषणात्मक अध्ययन : एकात्म मानववाद के विशेष सन्दर्भ में" पर शोधरत हैं। आपके सम्पादन में राष्ट्रीय सामाजिक ज्वलन्त मुद्दो से सम्बद्ध कई पुस्तके भी प्रकाशित हो चुकी हैं जिसमें जम्मू कश्मीर जैसे विषय को लेकर "जम्मू कश्मीर में पाक प्रायोजित आतंकवाद", "तीन तलाक" जैसे महत्वपूर्ण विषय को लेकर तीन तलाक एक राजनीतिक एवं सामाजिक विमर्श, 21वीं सदी में महिला अधिकारों से सम्बद्ध, 21वीं सदी में महिला सुरक्षा समस्या एवं चुनौतियाँ विषय आदि पर पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उपर्युक्त पुस्तकों को अकादमी जगत में बहुत सराहना मिली है। आप विभिन्न सामाजिक एवं शैक्षिक समितियों के सदस्य के साथ साथ ही भारतीय राजनीतिक विज्ञान परिषद् के आजीवन सदस्य की सक्रिय भूमिका के रूप में कार्यरत आपके लेख भिन्न-भिन्न शोध पत्रिकाओं, जर्नल व संकलित पुस्तकों में प्रकाशित हो चुके है। आप राजनीति विज्ञान विषय के सहायक आचार्य के रूप में चमन लाल महाविद्यालय लण्ढौरा, रूड़की, हरिद्वार में कार्यरत है और महाविद्यालय में निरन्तर सेवाएँ दे रहे है।

अनामिका चौहान का जन्म ग्राम अम्बुवाला जिला, हरिद्वार, उत्तराखण्ड के मध्य वर्गीय परिवार में हुआ है आपकी प्रारम्भिक शिक्षा जनपद हरिद्वार में सम्पन्न हुई। आपने स्नातकोत्तर, अंग्रेजी, समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान और मास्टर ऑफ फिलोसफी की उपाधि गृह विज्ञान विषय से उत्तीर्ण की साथ ही आपने राष्ट्रीय शैक्षिक पात्रता परीक्षा (यू.जी.सी. नेट), यू.सेट गृह विज्ञान विषय में उत्तीर्ण की। आपकी पहचान एक युवा विज्ञानी और सक्रिय शिक्षिका के रूप में है। आपकी उपलब्धियों को देखते हुए मदरहुड विश्वविद्यालय, रूड़की हरिद्वार ने आपको शैक्षिक उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित भी किया है साथ ही उत्तराखण्ड राज्य परिषद् विज्ञान और प्रौद्योगिकी (Ucost Uttarakhand) ने भी आपको युवा विज्ञानी पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है। आप विभिन्न राष्ट्रीय संगोष्ठियों एवं संस्थाओं सक्रिय रूप से जुड़ी हुई है। पठन पाठन की संस्कृति में विशेष रूचि है। समय समय पर कई पत्र-पत्रिकाओं में विभिन्न विषयों से सम्बन्धित आपके शोध पत्र प्रकाशित होते रहे हैं। आप भारतीय विज्ञान कांग्रेस एसोसिएशन, कलकत्ता तथा होम साइंस एसोसिएशन इण्डिया की आजीवन सदस्य भी है।

वर्तमान में आप गृह विज्ञान विभाग के सहायक आचार्या के रूप में चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार में कार्यरत है।

₹1350
ISBN 978-81-942838-2-9
$ 72
www.absbooksindia.com
प्रकाशन

Principal
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में गुरुकुल शिक्षापद्धति का महत्व

डॉ. नीशू कुमार
अनामिका चौहान

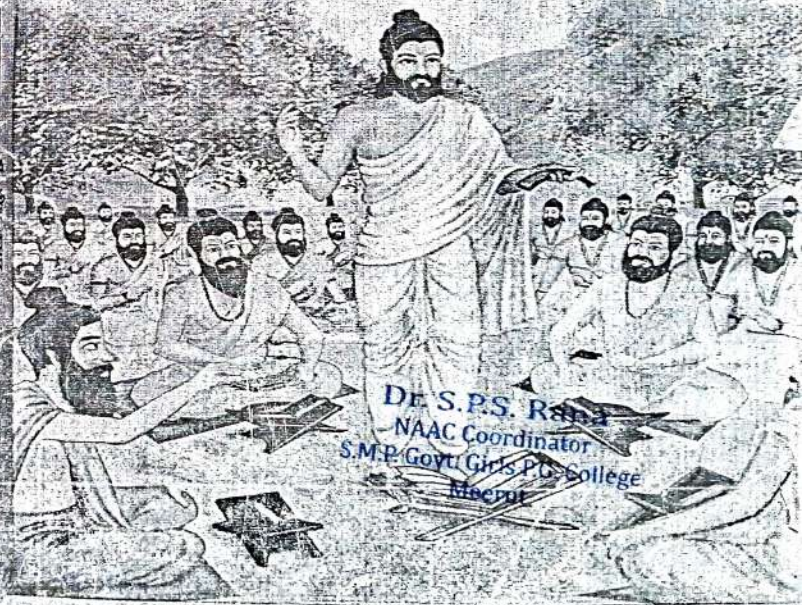

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

अनुक्रमणिका

	प्राक्कथन	v
	भूमिका	vi
1.	**आधुनिक भारत में शिक्षा : गुरूकुल शिक्षा पद्धति के संदर्भ में** नीशू कुमार	1
2.	**गुरूकुल परम्परा का पुनर्जागरण : आज की आवश्कता का पोषक देव संस्कृति विश्वविद्यालय** डॉ. दीपा गुप्ता	9
3.	**भारत में प्राचीन शिक्षा परम्परा** दीपक राठी	14
4.	**भारतीय प्राचीन शिक्षा व्यवस्था बनाम आधुनिक शिक्षा** विशाल कुमार लोदी अरविन्द सिरोही	20
5.	**गुरुकुल शिक्षा पद्धतिः मूलभूत सिद्धान्त** डॉ. रुकमेश चौहान	30
6.	**गुरूकुल-शिक्षा पद्धति का ऐतिहासिक संदर्भ** डॉ. नवीन चन्द्र गुप्ता	35
7.	**वर्तमान समय में गुरुकुल शिक्षा की प्रासंगिकता** मधु त्यागी	44
8.	**प्राचीन काल में शिक्षा एवं गुरू के दायित्व** मिनाक्षी	49
9.	**वर्तमान संदर्भ में गुरूकुल शिक्षा प्रणाली की अपरिहार्यता** डॉ. कुसुमलता	55
10.	**गुरूकुल शिक्षा व्यवस्थाः अध्ययन एवं विश्लेषण** पंकज कुमार	61
11.	**आधुनिक शिक्षा पद्धति में गुणवत्ता का प्रश्न** डॉ. राजेश कुमार	67

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. Colle
Meerut

ISBN : 978-81-942838-2-9
© सम्पादक

प्रकाशक
नालंदा प्रकाशन
C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053
मोबाइल : +9315194807
ई-मेल: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण– 2019

अक्षर सयोंजक
दीपिका शर्मा, दिल्ली-94

मुद्रक
ट्राईडेंट इंटरप्राइजेज, दिल्ली-32

पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित है। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग हेत इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप पुनरुत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता।

dhunik Paripekshya Me Gurukul Shiksha Paddati Ka Mahtava
by Dr. Nishu Kumar
Anamika Chauhan

प्राक्कथन

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति सदियों पुरानी है। आज 21वीं शताब्दी में सूचना प्रौद्योगिकी के दौर में भारतीय समाज के आचरण में सौहार्द सहिष्णुता का वर्तमान विधिवता वाले समाज में एकीकरण इसके प्रमाण रूप में देखा जा सकता है। दूसरी ओर वर्तमान समय विश्व भर में एक विषय प्रचलित है, जिसमें भारत को विश्व गुरू के रूप में प्रमाणित किया जा रहा है। (जिससे भारतीय उपमहाद्वीप में प्राचीन गुरूकुल शिक्षा पद्धति का विषय संज्ञान में आ रहा है। जिसकी प्रासंगिकता आधुनिक समाज के लिए नितांत आवश्यक हो गई है।) भारतीय समाज तकनीकी विकास एवं वैश्वीकरण से अलग-अलग संस्कृतियों व सभ्यता से परिचित हो रहा है। जिसके लिए अत्यन्त आवश्यक है कि भारतीय समाज अपनी सभ्यता एवं संस्कृति को बनाए रखे क्योंकि प्रतिस्पर्धा इसके दौर अनैतिक विषयों को रोकना जटिल होता जा रहा है।

गुरूकुल शिक्षा पद्धति की शिक्षा का प्रभाव ऐतिहासिक रूप से प्रमाण है कि भारत लगभग 900 वर्षों तक विदेशी शासन एवं आक्रमणों से ग्रस्त रहा किन्तु भारतीय समाज में कोई विसंगति एवं बिखराव नहीं देखा गया हालांकि जातिव्यवस्था, वर्ण व्यवस्था, महिलाओं की स्थिति में गिरावट में बढोत्तरी दिखी। 1947 के स्वशासन प्राप्ति के प्राचीन नैतिक व संस्कारी गुण भारतीय राजनीति, विदेश नीति एवं सामाजिक व्यवहार में दिखाई पड़ते हैं। गुरूकुल शिक्षा पद्धति वेद, वेदांग, उपनिषद, एवम् नैतिक आचरण पर आधारित वैदिक शिक्षा पद्धति थी जिसने मूल भारतीय समाज के मजबूत बुनियादी ढाँचे को आधार दिया।

भारतीय गुरूकुल शिक्षा पद्धति की आवश्यकता आधुनिक भारतीय समाज में हो रहे नैतिक पतन को रोकने के लिए भी है वर्तमान भारतीय समाज में बढ़ रही बुराइयों में बलात्कार चोरी, धोखाधड़ी, शोषण एवं यौन उत्पीड़न आदि प्रमुख हैं जिनसे बचने के लिए भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों को युवा पीढ़ी तक पहुँचाना आवश्यक है क्योंकि भारतीय समाज सूचना तकनीकी के माध्यम से अलग-अलग वैश्विक संस्कृतियो परिचय हो रहा है। जिससे दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र सहित देश के अलग-अलग भागों में बलात्कार एवं दुष्कर्म की घटनाएँ घट रही है।

Dr. S. P. S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

(9)

6
लघुकथा
विशेषांक

समकालीन महिला साहित्यकार

जनवरी-जून 2020

...ताकि लेखन गतिशील रहे!

Principal
S.M.R. Govt. Girls P.G. College
Meerut

संपादिका : सुमन चौधरी 'सुमन'

Dr. S.P.S. Rana
IQAC Coordinator

समकालीन महिला साहित्यकार

मूल्य : 50/-

क : 6 (जनवरी-जून 2020)
BN :

धान संपादिका
मता नौगरैया

ंपादिका
निरुपमा वर्मा

ह संपादिका
डॉ० स्वप्ना उप्रेती

बंध संपादिका
डॉ० शुभम त्यागी
डॉ० नीलम गोस्वामी

ग्राफिक डिजाइनर
कु० कनिका

साहित्यिक संपादिका
डॉ० स्वर्णलता कदम

संपादकीय कार्यालय
506/13, शास्त्री नगर
मेरठ-250004 (उ०प्र०)
दूरभाष : 0121-2709511
ई मेल : nirupmaprakashan@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ/आलेख व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

सभी पद अवैतनिक

समकालीन महिला साहित्यकारों की यह एकमात्र हिन्दी पत्रिका है, जिसे केवल महिलाओं द्वारा ही संचालित किया जाता है। उक्त पत्रिका में नए रचनाकारों, प्रतिष्ठित रचनाकारों के अभिव्यक्ति के लिए एक अनूठा मंच है। इसके माध्यम से महिला रचनाकार अपनी अभिव्यक्ति को अनेक व्यक्तियों तक पहुँचा सकती हैं। पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर प्रत्येक सदस्या को ससम्मान स्थान दिया जाता है। पत्र-पत्रिकाओं के पठन-पाठन को गति देने के लिए पत्रिका के सदस्य बनिए और बनाइए

...ताकि लेखन गतिशील रहे

नोट : प्रकाशन हेतु सामग्री कृतिदेव फॉन्ट (साइज 14 पाइंट) में टाइप कराकर भेजें।

स्थानीय संपादिका

बिजनौर : श्रीमती सुमन चौधरी 'सुमन'	Mob- : 9412855939
मेरठ : डॉ० स्वर्णलता 'कदम'	Mob- : 7017221334
कानपुर : डॉ० कुसुम सिंह 'अविचल'	Mob- : 9453815403
आसाम : श्रीमती अदिति चतुर्वेदी	Mob- : 9419059033
शामली : डॉ० अर्चना शर्मा	Mob- : 8273048484
बदायूँ : डॉ० शुभ्रा माहेश्वरी	Mob- : 9319940194
दिल्ली : डॉ० हरजीत कौर	Mob- : 9811820061
हैदराबाद : श्रीमती मनिका भारद्वाज	Mob- : 9557766915

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. Colleg
Meerut

अनुक्रम

लघु कथाएँ 5

माँ प्रमाण/ रंजना प्रकाश..........6
मुट्ठी में रेत/ डॉ० निरुपमा वर्मा..........6
सुरजमुखी/ डॉ० निरुपमा वर्मा..........7
अवैध कौन/ अर्चना कोचर..........7
स्पीड/ अर्चना कोचर..........8
कड़वे बीज/ राजकुमारी चौकसे..........8
मेरी पुकार सुन ली/ राजकुमारी चौकसे..........9
टिक-टिक-टिक/ डॉ० वन्दना शर्मा..........10
अहसास/ डॉ० वन्दना शर्मा..........11
क्या यही प्यार है/ डॉ० वन्दना शर्मा..........11
पढ़ी-लिखी बहू/ डॉ० वन्दना शर्मा..........12
जल है तो कल है/ सुमन चौधरी 'सुमन'..........12
व्यथा / ऋतुबाला रस्तोगी..........12
बड़ा भाई/ऋतुबाला रस्तोगी..........13
प्रताडित/ करुणा विश्नोई..........13
रक्षा बन्धन /..........13
बंजर/ करुणा विश्नोइ..........14
स्त्री/ करुणा विश्नोई..........14
बेटी/ करुणा विश्नोई..........14
पेंशन/ करुणा विश्नोई..........14
मेहनत का फल/ करुणा विश्नोई..........15
पुनरावृत्ति/ करुणा विश्नोई..........15
आशीष/ अर्पणा गर्ग..........16
गौरव और गरिमा/ अर्पणा गर्ग..........16
कहानी/ रचना शास्त्री..........17
संघर्ष/ फरहा..........17
सबसे कीमती चीज/ ज्योति सैनी..........18
सुपात्र / कुन्ती हरिराम..........18
मानवीय संवेदना/ कुन्ती हरिराम..........18
जीवन मूल्य/ रुखसार..........19
आत्म निर्भरता/ खैरुनिशा..........
गुनाहगार/ गिरिजा कुलश्रेष्ठ..........
बेजमीन/ गिरिजा कुलश्रेष्ठ..........
मेरी बेटी/ साधना वैद..........
धंधा/ संध्या शर्मा..........
विश्वास की सरहद/ मीरा जैन..........
स्वाभिमान/ लाडो कटारिया..........
शायद/ लाडो कटारिया..........
वेलेंटाइन डे/ लाडो कटारिया..........

कविताएँ

हिन्दुस्तानी नारी/ डॉ० निर्मला राजपूत..........
दहेज/ नीलम मिश्रा 'तरंग'..........
यादें/ डॉ० मीनू गुप्ता..........
अन्नप्राशन/ मोयली अग्रवाल..........
उदासी के नाम/ डॉ० शुभ्रा माहेश्वरी..........
गजलें/ नेहा..........

विविधा

अति का विश्लेषण जरूरी है/ रश्मि प्रभा..........
अनुभव/ माधुरी नगर कर..........
क्षणिकाएँ/ माधुरी नगरकर..........
तन्हाईयों के बीच/ डॉ० स्वप्ना उप्रेती..........
प्रथम मातृत्व की चाह/ डॉ० स्वप्ना उप्रेती..........
आधुनिक समाज में महिलाओं के प्रति हिंसा के विविध आयाम/ डॉ० स्वर्णलता कदम..........
औषधीय पौधा तुलसी/ कामिनी श्रीवास्तव..........
योग अभ्यास/ डॉ० नीलम गोस्वामी..........
अनोखे है आप पूरी दुनिया में / मीना गुप्ता..........
परिन्दें / हरजीत कौर..........
युवाओं में डिप्रेशन/ डॉ० कमला माहेश्वरी..........
महिला लेखिकाओं की नई पुस्तकें..........

NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. Colle

304

डा. स्वर्णलता कदम, मेरठ

आधुनिक समाज में महिलाओं के प्रति हिंसा के विभिन्न आयाम

'नारी जीवन, गहरा सागर, दोनों एक समान
उसमें भी तूफान हमेशा, इसमें भी तूफान।
बस करो हे पुरुष, ये अपना दमन बंद करो
मेरे साथ मिल ओ नारी समाज, ये आवाज बुलंद करो।।'

स्वामी विवेकानंद ने भी कहा था कि, **"जब तक महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं होगा विश्व के कल्याण की कोई सम्भावना नहीं है। एक पक्षी के लिए एक पंख से उड़ना संभव नहीं है।"**

हमारे समाज के पूर्ण विकास की राह में कुछ प्रश्न ऐसे भी हैं जनका समाधान किए बिना स्वयं पर गर्व करना बेमानी है। जिन्हें हल करने में विद्वान, समाजशास्त्री, राजनेता, लेखक, चिंतक, शिक्षक एवं पत्रकारगण अपने अपने तरीके से प्रयत्नशील है। ऐसा ही एक प्रश्न है कि मानवता का सबसे बड़ा अभिशाप क्या है। किस व्यक्ति वस्तु संस्था के द्वारा है। सामान्य रूप से एक अमेरिकी कहेगा लादेन का इस्लामिक आतंकवाद, हम कहेंगे डी कम्पनी और तेक्सलवाद, भ्रष्टाचार और अपराध ईराक या अफगानिस्तान कहेंगे अमेरिका की निरंकुशता। उक्त चिंतनीय समस्याएँ जिस एक स्रोत की ओर इंगित करती हैं वह है प्रत्येक देश में व्याप्त धार्मिक एवं साम्प्रदायिक वैमनस्य। परस्पर विद्वेष विश्वास शासन करने की प्रवृत्ति, शोषण एवं अन्याय विभाजन हमारे युग के प्रमुख लक्षण है। वैचारिक निरंकुशता की इस भयंकर आँधी में कोई ऐसा भी है चाहे हिंदू हो या मुस्लिम, यहूदी हो ईसाई, अमीर हो या गरीब, देश में हो या विदेश में सब एक तरफ निशाने पर होता है। प्रताड़ित किया जाता है। यहाँ मेरा आशय प्लेनेट की उस आधी अबादी से है जिसका नाम स्त्री है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह पृथ्वी के किस क्षेत्र की निवासिनी है?कौन से समाज संस्कृति से जुड़ी है?कौन सी भाषा बोलती है?किस साहित्य का कथ्य और किस राजा की प्रजा है?स्त्री का कहीं भी, कभी भी कोई बचाव नहीं। वह कहीं पूर्ण रूपेण सुरक्षित नहीं स्वतंत्र नहीं।

वह अपने जीवन की सार्थकता को अपने निजी अस्तित्व के संदर्भ में उपलब्ध करना चाहती है। प्रकारांतर से आधुनिक युग में स्त्री का यह विद्रोह हजारों वर्षों की अमानवीय पितृसत्ता की दासता को एक खुली चुनौती है। इस दासता में स्त्री का संपूर्ण जीवन एवं अस्तित्व हर पल घुटता रहा है, चाहे वह चौखट के बाहर की, चाहे वह घर हो या बाजार, चाहे वह धर्म हो या समाज चाहे वह परंपरा हो या संस्कृति, चाहे वह नियम हो या रीति-रिवाज, हर जगह उसे बाँधा एवं जकड़ा गया। कभी धर्म एवं नैतिकता की आड़ में तो कभी शास्त्रों एवं परम्परा की दुहाई देकर। तमाम नियम सिर्फ उसके लिए बनाए गये हैं, पर उसका अपना कुछ भी नहीं। वह तो बस एक मादा है एक वस्तु है, एक चीज है, एक सम्पत्ति है, एक देह है और एक माध्यम है पुरुष का। पुरुष के द्वारा और पुरुष के लिए मनोरंजन, क्रय-विक्रय, प्रजनन, भोग और शोषण का–

"औरत ने जन्म दिया मर्दों को, मर्दों ने उसे बाजार दिया।
जब जी चाहा मचला कुचला, जब चाहा दुत्कार दिया।
चुनती है कहीं दिवारों में बिकती है कहीं बाजारों में।
नंगी नचवाई जाती है अय्याशों के दरबारों में
यह वह बेइज्जत चीज है, जो बँट जाती है इज्जतदारों में।"

सृष्टि की संरक्षिका एवं जन्मदात्री कही जाने वाली नारी के संघर्ष की कहानी शताब्दियों से चली आ रही है। समाज को महिला दिवस की औपचारिकता निभाते हुए भी सौ वर्ष से अधिक समय हो गया है। परन्तु आज की नारी की स्थिति में बहुत सुखद परिवर्तन नहीं आया है। भारत विकास एवं आधुनिकीकरण के पथ पर अग्रसर है। परन्तु संस्कृति एवं परम्पराओं के नाम पर महिलाओं का शोषण बदस्तूर जारी है। अशिक्षा, भ्रूण हत्या, बाल विवाह, दहेज प्रथा एवं घरेलू हिंसा जैसी कुरीतियों के जाल में आज भी महिलाएँ जकड़ी हुई हैं। यद्यपि 'घरेलू हिंसा महिला संरक्षण अधिनियम 2005' लागू कर दिया गया है। परन्तु महिलाओं के विरूद्ध हिंसक व्यवहार की

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P.Govt. Girls P.G. College
Meerut

Innovations in Science and Technology

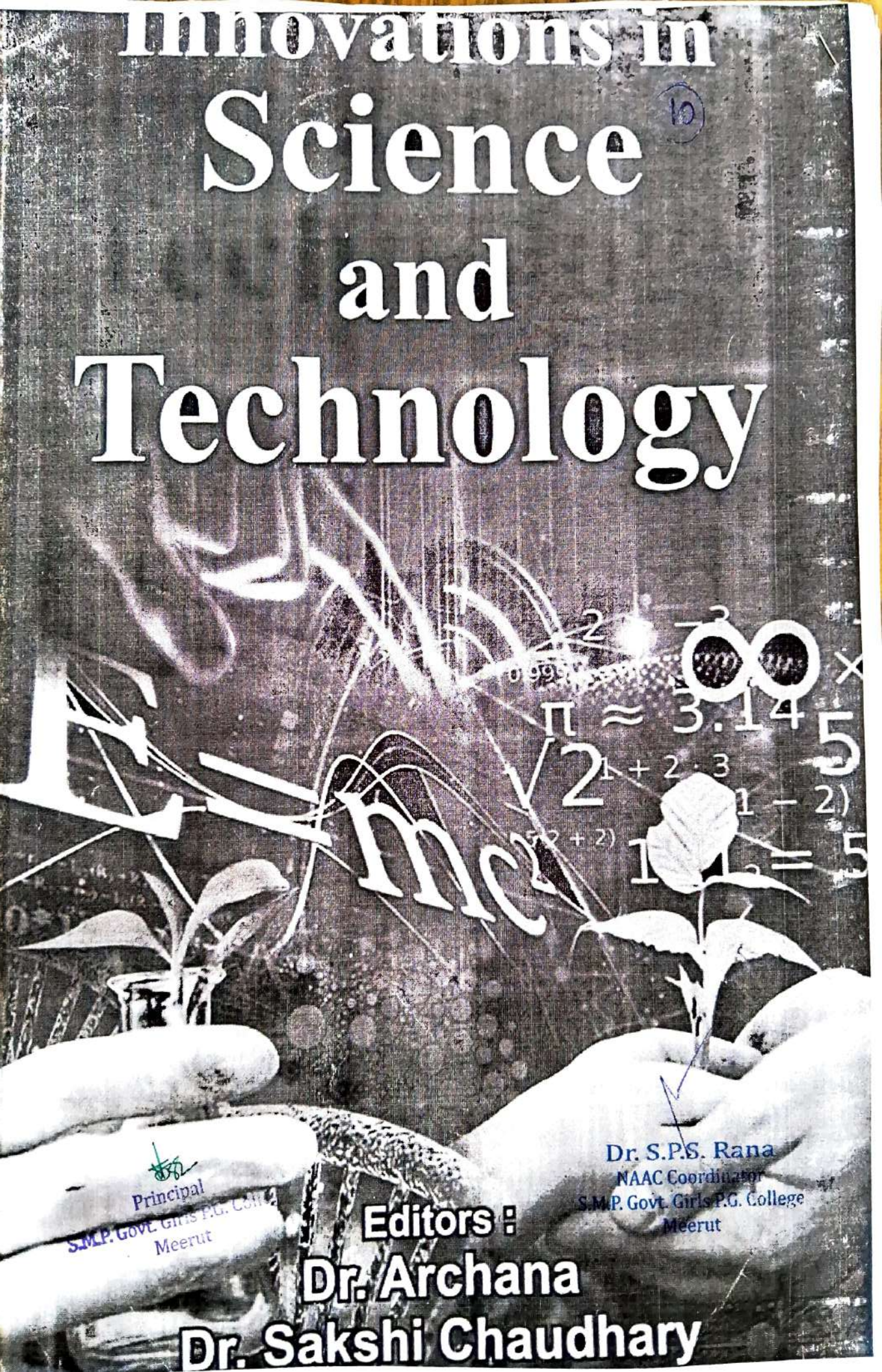

Principal
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

Editors :
Dr. Archana
Dr. Sakshi Chaudhary

11. Occurrence and Measurement of Radon and Thoron in Natural Environment — 89
Sachin Kumar

12. Waste Management and Green Chemistry — 98
Dr. Anita Sharma

13. Recent Biotechnological Advances in Medical Sciences — 108
Swagata Chatterjee, Ranjeeta Bansala and Navin Kumar

14. Cadmium – A Priority Heavy Metal — 115
Dr. Garima Pandit

15. Influence of Pollution and Population on Environment — 122
Vibha Sharma

16. Evolution and Importance of Different Type of Protein Phosphatases — 129
Hari Om Sharma

17. Metal Dependent Phosphatase, Protein Tyrosine Phosphatase, and Protein Kinase: Occurrence and Physiological Significance — 143
Hari Om Sharma

18. Industrial Waste Management — 155
Kalpana Mittal

19. Rheological, Inhibition, and Different Type of Stress Studies of Protein Serine/ Threonine Phosphatase — 162
Hari Om Sharma

20. Sea Pollution by Ships and Cleaning Methods — 175
Dr. (Mrs) Nupur Shishodia Mudgal and Mr Bhopal Singh

21. Formation of Shock Wave — 183
S. K. Sharma

22. Pollution Caused by Chemicals — 186
Dr. Ritu Verma

23. An Introduction to Polymers — 198
Alka Chaudhary

24. Cancer: An Overview — 210
Renu Verma

25. Food Adulteration – Determination and Impact on Human Health — 215
Sakshi Chaudhary

26. Solid Waste Management and Disposal Method — 223
Dr. Meenakshi Yadav

27. Sustainable Development: A Goal Less Achieved & Miles To Go — 232
Manisha Singhal

28. Computational Methods: Hartree-Fock and Density Functional Theory (DFT) — 239
Vinita, Jayant Teotia, Isha Rathi, Vishrut Chaudhary, Seema, M.K.Yadav

29. Extraction & Preliminary Phytochemical Screening Techniques in Phytochemical Research — 249
Dr. (Ms) Vinay Prabha Sharma

30. Conducting Ploymers — 260
Radha Mishra

31. Design, Synthesis and Evaluation of Novel Quinazolin -4(3H)-onyl Derivatives of Azetidinones as Potential Anticonvulsant Agents — 270
Anandveer Sindhu

32. Pollution — Harm to Our Environment — 283
Dr. Shweta Jain

33. Toxic Substances in Our Environment — 292
Dr. Abha Awasthi

34. Medicinal Herbs — 304
Dr. Nupur Prasad

35. Constrained Optimization with Nelder Mead and Non Uniform Based Self Organizing Migrating Algorithm — 309
Rahul Kumar, Seema Agrawal, Dipti Singh

Index — 323

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

IMG-20221104-WA0021.jpg
11/5/22, 3:15 PM

23

An Introduction to Polymers

Alka Chaudhary
Assistant Professor, SMPGG (PG) College, Meerut

In modern world everyone has need to complete tasks in a moment. Scientists have gifted us a long list of appliances that help us whether we are at home, at play or at work place. And everywhere we find plastics. In the living room is the television, the video or the music system, while at work, we may use a computer, a fax machine. In the kitchen, there are the labour-saving devices like washing machines, microwave ovens, kettles.

Plastics make electrical goods safer, lighter, more attractive, quieter and more durable. Plastics make hygienic and attractive knobs, handles and door facings on cookers; liners, handles and internal fittings on refrigerators and freezers; housings and tops on washing machines and dishwashers. Key requirement of safety for goods such as food processors, toasters, kettles and hairdryers is also met by plastics. Filled, impact- and fire-resistant plastics make tough and durable housings and handles for tools such as drills, paint-strippers, lawnmowers, vacuum cleaners and hedge-trimmers.

Essential to the modern office are smart and hard wearing plastic keypads and housings for telephones, machines photocopiers and computers. Plastics do not conduct electricity and are therefore used in a variety of applications where their insulating properties are needed. PVC is widely used to insulate electric wiring, while thermosets (which can withstand high temperatures) are used for switches, light fittings

and handles. Plastics are especially suited to housings for goods such as hairdryers, electric razors and food mixers as they protect the consumer from the risk of electric shock.

Question arises about the chemical nature of plastics. Plastics are polymers.

A polymer is a macromolecule with high molecular mass formed (in the presence of heat, pressure, catalyst etc.) by the joining of a large number of simpler / smaller molecules (called monomers). The process of their formation is called polymerization. They are characterized by variable molecular weight (depending on the source or mode of synthesis or extraction), low specific gravity, resistance to erosion, corrosion, any attack by microbes etc.

There are two types of polymers: synthetic and natural. Naturally occurring polymers are called natural polymers. Examples of naturally occurring polymers are cotton, rubber, silk, wool, DNA, cellulose and proteins. There are also polymers modified from these natural polymers viz., cellophane, cellulose rayon, leather etc. Synthetic polymers are derived from petroleum oil. Examples of synthetic polymers include nylon, polyethylene, polyester, Teflon, and epoxy.

Polymers are further classified as homochain and heterochain polymers based on whether the polymeric chain is made of only carbon atoms or also of heteroatoms such as oxygen, nitrogen, sulphur, silicon etc. Polyethylene, Teflon, polystyrene, PVC (polyvinyl chloride) are homochain polymers since their polymeric chain is made of only carbon atoms.

Polymerization is classified based on (i) the mechanism of the process and (ii) practical aspects of the process.

Based on the mechanism, polymerization is broadly classified into two types namely (1) Addition or Chain polymerization and (2) Condensation or Step polymerization.

Addition polymerization is the mechanism, which results in products, which are exact multiples of the original monomer molecule. Here, the monomer units, under the influence of heat, pressure, catalyst etc., add together with the conversion of C=C into C-C systems. Addition polymerization is also termed as chain polymerization as the reaction proceeds by chain mechanism. Some examples of addition polymers are polyethylene, polypropylene, polystyrene etc. Any chain reaction involves three major steps namely chain initiation, chain propagation

Dr. S.R.S. Rao
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. Coll.
Meerut

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था मे गुरूकुल शिक्षा प्रणाली का महत्व

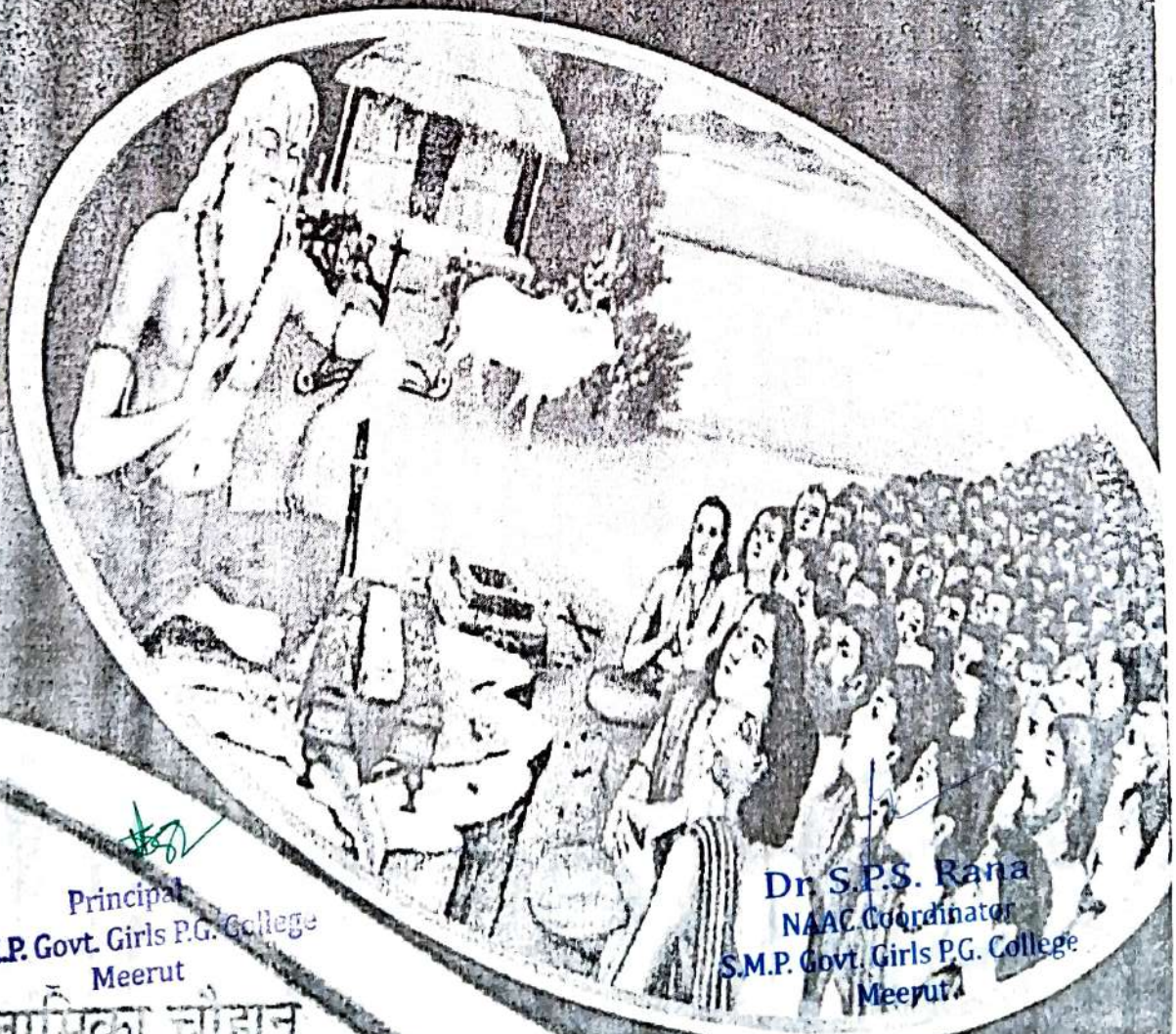

अनामिका चौहान

Principal
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

छात्र या छात्रा पर अनावश्यक रूप से दबाव बनाकर किसी विषय विशेष को पढ़ने के लिए बाध्येय नहीं किया जाता। इससे छात्रों में मौलिकता और नवीनता के प्रति जिज्ञासा का भाव उत्पन्न हो रहा है। छात्र-छात्राओं को विषय विशेष से सम्बन्धित सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ-साथ व्यवहारिक ज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है।

डॉ. अनीता सती
असिसटेंट प्रोफेसर
गृह विज्ञान विभाग बिड़ला कैम्पस श्रीनगर
हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय
श्रीनगर केन्द्रिय विश्वविद्यालय

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन
भूमिका

1. वर्तमान समय में गुरूकुल शिक्षा पद्धति का महत्व : एक अध्ययन
अनामिका चौहान
2. प्राचीन भारत की गुरूकुल शिक्षा पद्धति एवं आधुनिक भारतीय समाज में इसकी प्रासंगिकता
डॉ. पूनम
डॉ. रणवीर सिंह
3. नैतिक मूल्य : देवत्व ग्रहण की आधारशिला 1
प्रीति गुप्ता
4. शिक्षा की गुरूकुल पद्धति, लार्ड मैकाले और आज की आवश्यकता 15
डॉ. राकेश गुप्ता
5. सार्थक एवं सर्वांगपूर्ण शिक्षा की दिशाधारा 22
डॉ. नरेन्द्र प्रताप सिंह
6. गुरूकुल : स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के परिप्रेक्ष में 29
सुशील कुमार तोमर
अनुज कुमार मझना
7. गुरूकुल शिक्षा पद्धति एवं भारतीय संस्कृति का अन्तः संम्बन्ध 33
डॉ. पारुल मलिक
8. गुरूकुल शिक्षा पद्धति का ऐतिहासिक सन्दर्भ 39
डॉ. कमलेश कुमार
9. अशिक्षित अभिभावकों का महिला शैक्षिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति की तुलना : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में 43
डॉ. जे.एस. भारद्वाज
पूजा सैनी

Dr. S.P.S.
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G.
Meerut

10. आधुनिक परिवेश में गुरूकुल शिक्षा पद्धति की प्रासंगिकता 54
गंगाधार सिंह
11. प्राचीन भारत की गौरवशाली शिक्षण संस्था "तक्षशिला" 62
संजीव कुमार
12. गुरूकुल शिक्षा पद्धति नैतिकता मूल्य, चरित्र निर्माण, राष्ट्र निर्माण : एक विमर्श 65
विक्रान्त गिर
डॉ. अजयपाल सिंह
13. गुरूकुल शिक्षा पद्धति एवं आधुनिक परिवेश में इसकी उपादेयता 71
विशाल कुमार लोधी
डॉ. दीप्ती कौशिक
14. गुरूकुल शिक्षा पद्धति की 21वीं सदी में प्रासंगिकता 83
डॉ. विकास कुमार
15. वर्तमान समय की मांग : गुरूकुल शिक्षा व्यवस्था 88
अमर ज्योति
16. वर्तमान समय में गुरूकुल शिक्षा पद्धति की प्रासंगिकता 94
गनेश जायसवाल
17. गुरूकुल शिक्षा पद्धति की अवधारणा 99
डॉ. अनिता रानी
18. भारतीय शिक्षा व्यवस्था का गिरता स्तर 104
कु. प्रवीन
19. वैदिक, बौद्ध व मुस्लिम कालीन शिक्षा की वर्तमान में प्रासंगिकता 112
राजबाला
20. गुरूकुल शिक्षण पद्धति की ऐतिहासिक परम्परा का भारतीय संगीत के आलोक में अध्ययन 119
डॉ. शिप्रा पन्त
21. वैदिक शिक्षा बनाम आधुनिक शिक्षा 124
डॉ. शालिनी
22. स्मृतिवाङ्मये दण्डव्यवस्था 137
डॉ. शिखा शर्मा
23. Degradation of Moral Values Among Indian Youths 143
Sheetal

1.

वर्तमान समय में गुरूकुल शिक्षा पद्धति का महत्व : एक अध्ययन

अनामिका चौहान *

किसी भी देश की उन्नति विकास तक सिद्ध हो सकती है जब इस देश की शिक्षा व्यवस्था उचित हो। शिक्षा से उस देश के बच्चे सही आचार सीखते है जिससे कि भविष्य में वही बच्चे देश के विकास में अपना योगदान प्रदान करें। जीवन में सफल होने के लिए सही ज्ञान व शिक्षा का होना आवश्यक है यदि सही शिक्षा प्राप्त की जाये तो प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में सफल हो सकता है। भारत एक ऐसा देश है जिसमें सभी धर्मों के व्यक्ति एक साथ रहते हैं। प्रत्येक दिन कुछ न कुछ आपराधिक सूचनाऐं प्राप्त होती रहती है कुछ दोष इसमें हमारे देश की शिक्षा प्रणाली का भी है। शिक्षा से नैतिक मूल्यों की शिक्षा को पूरी तरह हटा दिया गया है। जिससे आज के बच्चे नैतिकता को भूलते जा रहे है। प्राचीन काल में अपराधों की संख्या कम थी तथा व्यक्ति विभिन्न रिश्तों से जुड़ा एक सामाजिक प्राणी होता था लेकिन आज के आधुनिकता के युग में व्यक्ति एकात्म होता जा रहा है वह उसे केवल और केवल अपनी इच्छायें व खुशी के लिए कुछ भी कार्य करने को तैयार रहता है। प्राचीन समय में गुरूकुल शिक्षा पद्धति एक ऐसी शिक्षा पद्धति होती थी जिसमें व्यक्ति केवल शिक्षित नहीं होता था बल्कि उसका सम्पूर्ण विकास होता था तथा एक उत्तम प्राणी बनाने की मंसा गुरूकुल शिक्षा पद्धति में होती थी। गुरू व शिष्य का आपसी रिश्ता इतना गहरा होता था कि व्यक्ति अपने पिता से अधिक अपने गुरूजों की आज्ञा

* शोधार्थी, आचार्य गृह विज्ञान विभाग, दमन लाल महाविद्यालय, लन्धौरा, हरिद्वार

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls ...
Meerut

(12)

पंडित दीनदयाल उपाध्याय एवं युवा शक्ति

एक विश्लेषण

Pandit Deendayal Upadhyay and Youth Power

An Analysis

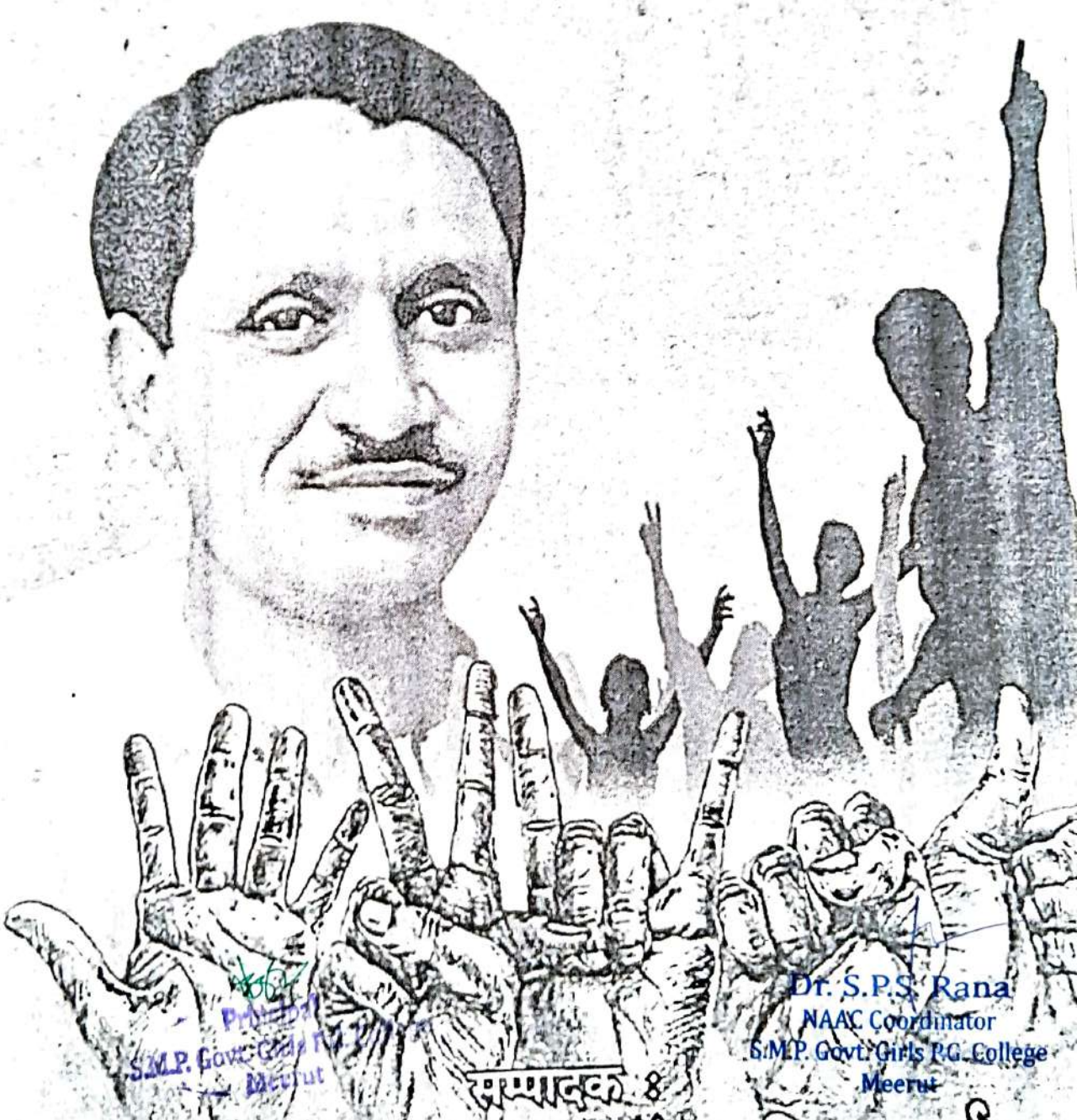

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

सम्पादक :

डॉ. ममता सिंह ◇ डॉ. कविता गर्ग

डी० एन० कॉलिज मेरठ, डॉ० दुष्यन्त कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर, अमर सिंह कॉलिज लखावटी, डॉ० नीना बत्रा, अर्थशास्त्र विभागाध्यक्षा, आर० जी० पी० जी० कॉलिज मेरठ, डॉ० एच० पी० सिंह, मेरठ कॉलिज मेरठ, डॉ० जसवीर सिंह, किसान कॉलिज बयाना, डॉ० एम० एल० अग्रवाल, डी० एन० कॉलिज मेरठ, डॉ० अंग्रेज सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, पीलीभीत, डॉ० मनोज राठौड, असिस्टेंट प्रोफेसर, आगरा विश्वविद्यालय आगरा, डॉ० मोनिका गहरोत्रा, एसोसिएट प्रोफेसर, सुभारती विश्वविद्यालय मेरठ, एवं महाविद्यालय परिवार के समस्त सदस्यों का आभार व्यक्त करती हूँ।

देश के युवा वर्ग में बढ़ता असंतोष राष्ट्र के लिए चिन्ता का विषय है। इस असंतोष के अनेक कारक है। कुछ हमारे देश की वर्तमान परिस्थितियां इसके लिए उत्तरदायी है तो कुछ उत्तरदायित्व हमारी त्रुटियां राष्ट्रीय नीतियो एवं दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति का भी है। अनियंत्रित रूप से बढती जनसंख्या के फलस्वरूप उत्पन्न प्रतिस्पर्धा से युवा वर्ग में असंतोष की भावना उत्पन्न होती है। जब युवाओं के हुनर का कोई राष्ट्र समुचित उपयोग नही कर पाता है तब युवा असंतोष मुखर हो उठता है। इसे समाप्त करने के लिए आवश्यक है कि हमारे राजनीतिज्ञ व प्रमुख पदाधिकारीगण निजी स्वार्थ से ऊपर उठकर देश के विकास की ओर ध्यान केंद्रित करे एवं सुदृढ नीतियां लागू करें, क्योंकि किसी भी राष्ट्र अथवा देश के नवयुवक उस राष्ट्र के विकास एवं निर्माण की आधारशिला होते है। इसी विषय "वर्तमान समय में युवा शक्ति के निर्माण में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की प्रासंगिकता" को लेकर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। वास्तव में पंडित दीनदयाल जी का आर्दशात्मक जीवन आज के युवा वर्ग के लिए नैतिक मूल्यों को आगे बढ़ाने व देश प्रगति के लिए नितान्त आवश्यक है। आशा है कि शोधरत छात्र-छात्राएँ इसके अध्ययन से लाभांवित होंगे।

अन्त में प्रेम सिंह बिष्ट, एन.बी. पब्लिकेशन गाजियाबाद धन्यवाद का पात्र है जिन्होंने सभी सुझावों के साथ पुस्तक को समय पर प्रकाशित किया।

डॉ० ममता सिंह
अर्थशास्त्र विभागाध्यक्षा
डॉ० कविता गर्ग
असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग

विषय-सूची

आभार v

पंडित दीनदयाल उपाध्याय एवं युवा शक्तिः एक विश्लेषण

1. दीनदयाल चिंतन–युवा वर्ग का प्रेरणा स्त्रोत 1
   डॉ. नीलिमा गुप्ता
1. वर्तमान समय में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की प्रासंगिकता 11
   डॉ. ममता सिंह एवं डॉ. कविता गर्ग
3. पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक सच्चा राष्ट्रभक्त 23
   विशाल कुमार लोधी, निखाह मुबिन एवं डॉ. दीप्ती कौशिक
4. पंडित दीनदयाल उपाध्याय का व्यनित दर्शन 31
   डॉ. नीना बत्रा एवं डॉ. गीता
5. पं० दीनदयाल उपाध्याय जी के आर्थिक विचार–कृषि आय को बढ़ाना एवं वर्तमान सरकार द्वारा किसानों की आय को दोगुना करने का तुलनात्मक अध्ययन 37
   डॉ. अलका सूरी
6. शिक्षा के क्षेत्र में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की प्रासंगिकता 47
   डॉ. मीना कुमारी तोमर एवं डा. नीलम शर्मा
7. वर्तमान युवा शक्ति के निर्माण में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की प्रासंगिकता 61
   डॉ. ममता सिंह

Dr. S.P.S. R...
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

हम अपनी सभ्यता व संस्कृति से जुड़कर नहीं रहेंगे, तो युवा पीढ़ी को भटकने से कोई नहीं रोक सकता है। सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ाव तथा प्रेम ही इन समस्याओं का एकमात्र समाधान है।

उपभोगवाद, पाश्चात्य चिन्तन का मूल है, जिसका केन्द्र व्यक्ति है। व्यक्ति को अपनी सुख सुविधाओं के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहना पड़ता है। इन सभी प्रयत्नों के फलस्वरूप प्राकृतिक संपदाओं का दोहन बढ़ गया है। इसने भौतिक विकास को बहुत उन्नत किया है,परन्तु प्रकृति खतरनाक रूप ले रही है। विश्व में आज इन समस्याओं पर चर्चा हो रही है, सम्मेलन हो रहे हैं, रिसर्च पेपर लिखे जा रहे हैं। किन्तु समाधान नहीं मिल पा रहा है। अपनी धरोहर से लगाव एवं उन्हें संरक्षित रखना ही इसका एकमात्र समाधान है। साथ ही जीवन मूल्यों में विश्वास रखते हुए, उन्हें अधिकाधिक रूप से जीवन में उतारने का प्रयास करें। आज की शिक्षा व्यवस्था भी इस चिंता का प्रमुख कारण है। शिक्षा इतनी महंगी हो गई है कि एक विशेष वर्ग ही इसका लाभ ले पा रहा है, वहीं निःशुल्क या सस्ती शिक्षा मूलभूत सुविधाओं एवं जवाबदेही के अभाव में सारहीन हो चुकी है। शिक्षा व्यवसाय के रूप में परिवर्तित होती जा रही है, व्यापारिक वर्ग ही शिक्षण संस्थाओं के संचालक बने हुए हैं। दीनदयाल उपाध्याय को इस परिस्थिति का भान था, इसलिए उन्होंने कहा था कि शिक्षा की व्यवस्था करना समाज का उत्तरदायित्व है। क्योंकि शिक्षित समाज में ही स्वस्थ वातावरण का निर्माण होता है।

11

पं० दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववादी दर्शन की वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिता

*श्रीमती अनार ज्योति**

"शिक्षा एक निवेश है जो आगे चलकर शिक्षित व्यक्ति समाज की सेवा करेगा। एक व्यक्ति को अच्छी प्रकार शिक्षा देना वास्तव में समाज के हित में है। यदि समाज का हर व्यक्ति शिक्षित होगा तभी वह समाज के प्रति दायित्वों को पूरा करने में समर्थ होगा"

(पं० दीनदयाल उपाध्याय)

जनसंघ के राष्ट्र जीवन दर्शन के निर्माता पं० दीनदयाल उपाध्याय जी ने भारत की सनातन विचार को युगानुकूल रूप देते हुए एकात्मक मानववाद की विचार धारा प्रस्तुत की। पं जी ने एकात्म मानववाद का सिद्धान्त 1961–62 में प्रतिपादित किया जो वास्तव में एक विचार न होकर एक आन्दोलन है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत को अनियोजित तथा विकृत विकास को देखकर पं० जी अत्यन्त चिंतित व खिन्न हो उठे तथा उन्होंने अपने हृदय की इस छटपटाहट को समुचित व सामूहिक राष्ट्रीय विकास के दर्शन के रूप में एकात्म मानववाद का दर्शन दिया। पं० जी के अनुसार ऐसी स्वतन्त्रता का क्या फायदा जो देश के समग्र विकास में सहायक न होकर मानव–मानव में भेद पैदा करती है। इस प्रकार हम स्वतन्त्र होकर भी परतन्त्र ही रह, भेद सिर्फ इतना है कि पहले हम गैर (गोरे) के गुलाम थे जबकि आज अपने (काले) घर के लोगों के ही गुलाम हैं।

*असिस्टेंट प्रोफेसर (शिक्षा) [illegible] मेरठ (उ०प्र०)।

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

(13)

वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी:
विकास के विविध आयाम

डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव
अध्यक्ष
हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग
डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,
लखनऊ उ. प्र.

अकादमिक बुक्स इंडिया
दिल्ली – 110090

Principal
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

(123)

(120)

अनुक्रमाणिका

सम्पादकीय... 7

भाग - 1

समकालीन दौर में हिन्दी का वैश्विक साम्राज्य

1. भूमण्डलीकरण के दौर में हिन्दी 17
   — *मनोज कुमार*
2. विश्व भाषा के रूप में हिन्दी के प्रसार तथा विकास की सम्भावनाएँ 22
   — *डॉ. अल्का हिरकने*
3. हिन्दी भाषा एवं साहित्य का वैश्विक परिदृश्य 30
   — *डॉ. साधना अग्रवाल*
4. *वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा की दशा एवं दिशा* 37
   — *डॉ. विजय कुमार वर्मा*
5. वैश्विक परिदृश्य में हिन्दीः स्वरूप एवं सम्भावनाएँ 42
   — *डॉ. संजू*
6. विश्व पटल पर हिन्दी भाषाः एक सिंहावलोकन 50
   —*डॉ. शालिनी सिंह*

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

6

विश्व पटल पर हिन्दी भाषाः एक सिंहावलोकन

— डॉ. शालिनी सिंह

भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा हम अपनी भावनाओं और विचारों को किसी अन्य के समक्ष अभिव्यक्त करते हैं। भाषा व्यक्तिगत एवं विशेष समूहगत सम्पत्ति नही हैं बल्कि वह एक सामाजिक निधि है इसलिए सामाजिक सरोकार से परे कोई भाषा हो ही नही सकती। विश्वभर में बोलचाल के लिए लगभग 3500 भाषाओं और बोलियों का प्रयोग किया जाता है। मौखिक एवं लिखित दोनों प्रकार के संचार के लिए काम आने वाली भाषाओं में से लगभग 16 भाषाऐं ऐसी हैं जिनका व्यवहार 5 करोड़ से अधिक लोग करते है। विश्व की ये 16 प्रमुख भाषाऐं हैं अरबी, अंग्रेजी, इतालवी, उर्दू, चीनी परिवार की भाषा, जर्मन, जापानी, तमिल, तेलगु, पुर्तगाली, फ्रांसीसी, बांग्ला, मलय, रूसी, स्पेनी और हिन्दी। हिन्दी जितने राष्ट्रों की जनता द्वारा बोली व समझी जाती है, संयुक्त राष्ट्र की पहली 4 भाषायें - अंग्रेजी, रूसी, फ्रांसीसी एवं चीनी उतनी नही बोली जाती हैं। इसलिये हिन्दी संसार की अग्रिम पंक्ति में खड़ी होने का वैध अधिकार रखती हैं। विश्व में हिन्दी भाषी करीब 70 करोड़ लोग

... विभाग, शहीद मंगल पांडे, राजकीय महिला, स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

है यह तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा हैं 1.12 अरब बोलने वालों की संख्या के साथ अंग्रेजी पहले स्थान पर हैं। दूसरे स्थान पर चीनी भाषा मंदारिन बोलने वाले करीब 1.10 अरब हैं। 51.29 करोड़ स्पेनिश और 42.2 करोड़ अरबी का क्रमशः चौथा और पांचवा स्थान है।

किसी भी देश में राष्ट्र भाषा का सम्मान उस भाषा को ही प्राप्त होता हैं जो देश विशेष में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जाती हैं। भारत में राष्ट्रभाषा का अधिकारी होने का सम्मान हिन्दी भाषा को प्राप्त है। हिन्दी भाषा का साहित्य व भविष्य बहुत विशाल है उसके गर्भ में निहित भवितव्यताएं इस देश और उसकी भाषा द्वारा संसार भर के रंगमंच पर एक विशेष अभिनय करती हैं संसार की कोई भी भाषा मनुष्य जाति को ऊँचा उठाने, मनुष्य को यथार्थ में मनुष्य बनाने और संसार को सुसभ्य और सहभावनाओं से युक्त बनाने में उतनी सफल नही हुई जितनी की हिन्दी भाषा। 19 वीं सदी का आरंभ हिन्दी भाषा के विकास की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। सन् 1917 में गुजरात में हिन्दी साहित्य सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए गाँधी जी ने कहा था कि हिन्दी ही देश की राष्ट्रभाषा होनी चाहिये। 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने एकमत से हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया तथा 1950 में संविधान के द्वारा हिन्दी को देवनागरी लिपि में राजभाषा का दर्जा दिया गया। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर 1953 से 14 सितम्बर हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता हैं। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 लेकर अनुच्छेद 351 तक राजभाषा सम्बन्धी संवैधानिक प्रावधान किये गये हैं।

बीसवी शताब्दी के अन्तिम दो दशकों में हिन्दी का अन्तर्राष्ट्रीय विकास बहुत तेजी से हुआ। हिन्दी एशिया के व्यापारिक जगत् में धीरे-धीरे अपना स्वरूप बिंबित कर भविष्य की अग्रणी भाषा के रूप में स्वयं को स्थापित कर रही है। विश्व के लगभग 150 विश्वविद्यालयों और सैकड़ों छोटे-बड़े केन्द्रो में विश्वविद्यालय स्तर से लेकर शोध स्तर तक हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था हुई है। विदेशों में भी 25 से अधिक पत्र-पत्रिकाएं लगभग नियमित रूप से हिन्दी में प्रकाशित हो रही हैं। यूएई के 'हम. एफ-एम' सहित अनेक देश हिन्दी कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं, जिनमें बी बी सी, जर्मनी के डॉयचे बेले, जापान के एनएचके वर्ल्ड और चीन के चाइना रेडियो इंटरनेशनल की हिन्दी सेवा विशेष रूप से उल्लेखनीय है। 11 फरवरी 2008 को हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित करने के लिए हिन्दी सचिवालय की स्थापना की गयी। संयुक्त राष्ट्र रेडियो ने अपना प्रसारण हिन्दी

Dr. S.P.S. Rana
IQAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

(14)

किसानों की आत्महत्याओं से सुलगता भारतः समस्याएँ एवं चुनौतियाँ

डॉ. नीशू कुमार

P.P.H
प्रशांत पब्लिशिंग हाउस

Principal
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

द्वारा चलायी जा रही योजनाओं की जानकारी: एक अवलोकन
–उमेश चन्द 164
16 किसानों का दर्द–कर्ज और आत्महत्या –कु0 प्रवीन 176
17 किसानों को बर्बाद करती सरकारी नीतियाँ
–ललिता कुमारी, सन्दीप के0 पोसवाल 185
18 किसान से मजदूर बनने की व्यथा–कथा : पूस की रात
–डॉ. दत्ता कोल्हार 201
19 प्रेमचन्द साहित्य में किसान चेतना के स्वर –डॉ. राम भरोसे 207
20 किसान अन्नदाता नहीं सर्वहारा : एक अवलोकन
–गौरी, रवि कुमार 224
21 भारत में किसान आत्महत्या :– एक विश्लेषण
–कु0 सन्तरेष रानी 229
22 किसानों के जीवन की समस्याओं के मूल कारण : एक दृष्टि
–डॉ0 अमित जैन असि0 235
23 युवाओं का किसान आत्महत्या के प्रति दृष्टिकोण एक
अध्ययन –शंकर सिंह, अनित कौर 241
24 प्राचीनकाल से अब तक किसानों की दशा एवं दिशा का
स्वरूप –डॉ0 पारूल मलिक 251
25 "प्राचीनकाल में कौटिल्य द्वारा वर्णित कृषि व्यवस्था की
वर्तमान में महत्ता" –प्रीति गुप्ता 258
26 क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी से भारतीय डेयरी किसानों
को खतरा –डा० अनुराग शर्मा, डॉ0 देवपाल 265
27 Psychosocial Factors Versus Socioeconomic Geneses
Of Famer BipolarDisorders In India -Dr. Sarveshwar Pande 290
28 Micro Finance And Agriculture: How To Make It Work
For Farmers - Dr. Kanika Rawat 308
29 Impact of Globalization on Indian Farmer's Economic Condition
Kavita 313
30 Role of Mathematics in the field of Agriculture
- SarvesthaSangwan 323
31 Assessment Of Sustainable Agriculture In India With
Respect To Sdgs - ANUJ KUMAR BHADANA* 328
32 Farmers in the Novels of Prem Chand
- Dr.Pramod Kumar Kukreti 339

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

24

प्राचीनकाल से अब तक किसानों की दशा एवं दिशा का स्वरूप

डॉ0 पारूल मलिक (असि0 प्रोफेसर)
शहीद मंगलपाण्डे (पी0जी0) कॉलेज
बी0एड0 विभाग, मेरठ

"प्राचीन काल से ही भारत एक कृषि प्रधान देश रहा है। इसकी जनसंख्या का 1/3 आज भी इसी कार्य के द्वारा अपनी आजीविका अर्जन करता है। समय–समय पर भिन्न राजनीतिक परिस्थितियों के कारण किसान और कृषि की प्रक्रिया प्रभावित रही कभी इस पर सकारात्मक तो कभी नकारात्मक प्रभाव देखने को मिले। भारत में कृषि का एक लम्बा इतिहास रहा है। राजतंत्रों के समय किसानों पर लगने वाले करों का शासन कार्य सुचारू रूप से चलते रहने में महत्वपूर्ण योगदान होता था और जब लोकतांत्रिक शासन पद्धति स्थापित हुई तो किसान और कृषि की स्थिति सुधारने के लिए अनेक नीतियां लागू की गई क्योंकि ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीय किसान और कृषि की दशा तथा दिशा दोनों नकारात्मक हो गई थी। खाद्यान्नो के स्थान पर कम्पनी ने वाणिज्यिक फसलों को प्रमुखता प्रदान कर भारत को भूखों मरने की स्थिति में ला खडा कर दिया।"

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

(15)

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था मे गुरूकुल शिक्षा प्रणाली का महत्व

संपादक

अनामिका चौहान

सहायक आचार्य, गृह विज्ञान विभाग

चमनलाल महाविद्यालय

लण्ढौरा हरिद्वार

नालंदा प्रकाशन

दिल्ली

Principal
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन

भूमिका

1. **वर्तमान समय में गुरूकुल शिक्षा पद्धति का महत्व : एक अध्ययन** 1
   अनामिका चौहान
2. **प्राचीन भारत की गुरुकुल शिक्षा पद्धति एवं आधुनिक भारतीय समाज में इसकी प्रासंगिकता** 5
   डॉ. पूनम
   डॉ. रणवीर सिंह
3. **नैतिक मूल्य : देवत्व ग्रहण की आधारशिला** 11
   प्रीति गुप्ता
4. **शिक्षा की गुरुकुल पद्धति, लार्ड मैकाले और आज की आवश्यकता** 15
   डॉ. राकेश राणा
5. **सार्थक एवं सर्वांगपूर्ण शिक्षा की दिशाधारा** 22
   डॉ. नरेन्द्र प्रताप सिंह
6. **गुरूकुल : स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के परिप्रेक्ष में** 29
   सुनील कुमार तोमर
   अनुज कुमार भडाना
7. **गुरूकुल शिक्षां पद्धति एवं भारतीय संस्कृति का अन्तः संम्बन्ध** 33
   डॉ. पारूल मलिक
8. **गुरूकुल शिक्षा पद्धति का ऐतिहासिक सन्दर्भ** 39
   डॉ. कमलेश कुमार
9. **अशिक्षित अभिभावकों का महिला सशक्तिकरण के प्रति अभिवृत्ति की तुलना : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में** 43
   डॉ. जे.एस. भारद्वाज
   पूजा सैनी

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

7.

''गुरूकुल शिक्षां पद्धति एवं भारतीय संस्कृति का अन्तः संम्बन्ध''

डॉ. पारूल मलिक*

''गुरूकुल शिक्षा पद्धति भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग रही है तथा इसके द्वारा मनुष्य का सर्वांगीणं विकास कर उसे पूर्ण मानव बनाने का प्रयत्न प्राचीन मनीषियों के द्वारा किया गया। यहाँ पूर्ण मानव से तात्पर्य एक ऐसे मनुष्य से है जो मनुष्य मात्र की सेवा भावना रखते हुए धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है और अपने जीवन में अनुशासन, नैतिक व्यवहार तथा सांस्कृतिक मूल्यों को साथ लेकर चलता है। गुरूकुल में गुरू शिष्य का मानस पिता होता था ओर शिष्य के लिए पूरी तरह से उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार करता था। गुरूकुल में शिक्षा प्राप्त करने वाला विद्यार्थी ही समाज में आकर अपने व्यावहारिक मूल्यों से सांस्कृतिक तत्वों को जीवन देता और अपनी अगली पीढ़ी को हस्तांतरित करता था। इसी कारण भारतीय संस्कृति इतनी प्रखर और प्रवाहमानता ग्रहण कर पाई।''

प्राचीन भारतीय संस्कृति अपनी विशिष्टताओं के कारण आज भी अक्षुण्ण है। इसमें संदेह नहीं कि धर्म और दर्शन पर विशेष बल देने के कारण भारतीय संस्कृति अध्यात्मोन्मुखी रही है परन्तु प्राचीन भारतीय संस्कृति के सर्जक जीवन और उसके अधिभौतिक साधनों से भी प्रेम करते थे। भारतीय समाज में शिक्षा को सदैव महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। भारतीय समाज में प्राचीन

* असि. प्रोफेसर, शहीद मंगल पाण्डे राजकीय महिला स्नात्कोत्तर महाविद्यालय, माधवपुरम, मेरठ।

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

(16)

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था मे गुरूकुल शिक्षा प्रणाली का महत्व

संपादक
अनामिका चौहान
सहायक आचार्य, गृह विज्ञान विभाग
चमनलाल महाविद्यालय
लण्ढौरा हरिद्वार

नालंदा प्रकाशन
दिल्ली

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

Principal
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

10.	आधुनिक परिवेश में गुरूकुल शिक्षा पद्धति की प्रासंगिकता गंगादास सिंह	54
11.	प्राचीन भारत की गौरवशाली शिक्षण संस्था ''तक्षशिला'' संजीव कुमार	62
12.	गुरूकुल शिक्षा पद्धति नैतिकता मूल्य, चरित्र निर्माण, राष्ट्र निर्माण : एक विमर्श विकान्त गिर डॉ. अजयपाल सिंह	65
13.	गुरूकुल शिक्षा पद्धति एवं आधुनिक परिवेश में इसकी उपादेयता विशाल कुमार लोधी के. दीपी कौशिक	71
14.	गुरूकुल शिक्षा पद्धति की 21वीं सदी में प्रासंगिकता डॉ. विकास कुमार	83
15.	वर्तमान समय की मांग : गुरूकुल शिक्षा व्यवस्था अमर ज्योति	88
16.	वर्तमान समय में गुरुकुल शिक्षा पद्धति की प्रासंगिकता गनेश जायसवाल	94
17.	गुरूकुल शिक्षा पद्धति की अवधारणा डॉ. अनिता रानी	99
18.	भारतीय शिक्षा व्यवस्था का गिरता स्तर कु. प्रवीन	104
19.	वैदिक, बौद्ध व मुस्लिम कालीन शिक्षा की वर्तमान में प्रासंगिकता राजबाला	112
20.	गुरूकुल शिक्षण पद्धति की ऐतिहासिक परम्परा का भारतीय संगीत के आलोक में अध्ययन डॉ. शिप्रा पन्त	119
21.	वैदिक शिक्षा बनाम आधुनिक शिक्षा डॉ. शालिनी	124
22.	स्मृतिवाङ्मये दण्डव्यवस्था डॉ. शिखा शर्मा	137
23.	Degradation of Moral Values Among Indian Youths Sheetal	143

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

1.

वर्तमान समय में गुरूकुल शिक्षा पद्धति का महत्व : एक अध्ययन

अनामिका चौहान *

किसी भी देश की उन्नति विकास तक सिद्ध हो सकती है जब इस देश की शिक्षा व्यवस्था उचित हो। शिक्षा से उस देश के बच्चे सही आचार सीखते है जिससे कि भविष्य में वही बच्चे देश के विकास में अपना योगदान प्रदान करें। जीवन में सफल होने के लिए सही ज्ञान व शिक्षा का होना आवश्यक है यदि सही शिक्षा प्राप्त की जाये तो प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में सफल हो सकता है। भारत एक ऐसा देश है जिसमें सभी धर्मों के व्यक्ति एक साथ रहते है। प्रत्येक दिन कुछ न कुछ आपराधिक सूचनाऐं प्राप्त होती रहती है कुछ दोष इसमें हमारे देश की शिक्षा प्रणाली का भी है। शिक्षा से नैतिक मूल्यों की शिक्षा को पूरी तरह हटा दिया गया है। जिससे आज के बच्चे नैतिकता को भूलते जा रहे है। प्राचीन काल में अपराधों की संख्या कम थी तथा व्यक्ति विभिन्न रिश्तों से जूड़ा एक सामाजिक प्राणी होता था लेकिन आज के आधुनिकता के युग में व्यक्ति एकात्म होता जा रहा है वह उसे केवल और केवल अपनी इच्छायें व खुशी के लिए कुछ भी कार्य करने को तैयार रहता है। प्राचीन समय में गुरूकुल शिक्षा पद्धति एक ऐसी शिक्षा पद्धति होती थी जिसमें व्यक्ति केवल शिक्षित नहीं होता था बल्कि उसका सम्पूर्ण विकास होता था तथा एक उत्तम प्राणी बनाने की मंसा गुरूकुल शिक्षा पद्धति में होती थी। गुरू व शिष्य का आपसी रिश्ता इतना गहरा होता था कि व्यक्ति अपने पिता से अधिक अपने गुरूओं की आज्ञा

* सहायक आचार्या गृह विज्ञान विभाग, चपन लाल महाविद्यालय, लाण्डौरा, हरिद्वार

BOOK: GREEN INITIATIVES AND SUSTAINABLE DEVELOPMENT
PUBLISHER: LEARNING MEDIA PUBLICATION- MEERUT
ISBN - 9788194-250326
Year - 2020
PAGENO - 61-71.

(17)

5

2019-20

CLIMATE CHANGE : KEY DEVELOPMENTS FROM UNFCCC COP 1 TO COP 25

[6]Dr. Subhash Kumar[1], Dr. Yogendra Kumar Vikal[2], Dr. Sushil Kumar[3] and Dr. Pramod Kumar[4]

[1] Department of Botany, C.C.R. (P.G.) College, Muzaffarnagar
[2]Department of Political Science, RSSPG College, Pilkhuwa, Hapur
[3]Department of Botany, Shaheed Mangal Pandey Govt. PG College, Meerut
[3]Department of Ag. Chemistry, CSSS PG College, Machhra, Meerut

Chapter Content

- Introduction
- UNFCC COP 25 in Madrid (Spain) from 2-13 December 2019
- Key Milestones in the Evolution of International Climate Policy
- Reference

Introduction

The 2019 United Nations Climate Change Conference, also known as COP25, is the 25th United Nations Climate Change conference. It was held in Madrid, Spain, from 2 to 13 December 2019 under the presidency of the Chilean government. The conference incorporated the 25th Conference of the Parties to the United Nations Framework Convention on Climate Change (UNFCCC), the 15th meeting of the parties to the Kyoto Protocol (CMP15), and the second meeting of the parties to the Paris Agreement (CMA2). The UNFCCC's 25th Conference of the Parties (COP25) took place in Madrid, Spain after the original hosts Chile decided they could not guarantee the safety of the event amid widespread social unrest. The Chilean presidency had characterised this year's COP as a "COP of ambition",setting in motion a process that they hoped would see nations announcing commitments to submit improved Nationally Determined Contributions at COP26 in Glasgow next year under Presidentship of Claire Perry O'Neill. However, after two weeks of arduous negotiations, COP25 failed to reach agreement on a set of rules for international cooperation on market mechanisms. Parties will resume their negotiations at the next meeting of the Subsidiary Bodies in mid-2020. But the failure to reach agreement on Article 6 does not prevent countries from pursuing cooperation through market opportunities.

Principal
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

December 2-13, 2019 (COP-25)

The UN Climate Change Conference COP 25 (2 – 13 December 2019) took place under the Presidency of the Government of Chile and with logistical support from the Government of Spain. The President-designate for the conference was Ms. Carolina Schmidt, Minister of Environment of Chile. The conference was designed to take the next crucial steps in the UN climate change process. Following agreement on the implementation guidelines of the **Paris Agreement at COP 24 in Poland** last year, a key objective was to complete several matters with respect to the full operationalization of the **Paris Climate Change Agreement.** The conference furthermore served to build ambition ahead of 2020, the year in which countries have committed to submit new and updated national climate action plans. Crucial climate action work was taken forward in areas including finance, the transparency of climate action, forests and agriculture, technology, capacity building, loss and damage, indigenous peoples, cities, oceans and gender.

The conference included the **twenty-fifth session of the Conference of the Parties (COP 25),** the **fifteenth session of the Conference of the Parties** serving as the meeting of the Parties to the **Kyoto Protocol (CMP 15),** and the **second session of the Conference of the Parties** serving as the meeting of the Parties to the **Paris Agreement (CMA 2).** The fifty-first sessions of the Subsidiary Body for Scientific and Technological Advice (SBSta 51) and the Subsidiary Body for Implementation (SBI 51) took place 2 - 9 December 2019.

The conference did not result in agreement on carbon neutrality in 2050 and a no more than 1.5-degree temperature rise. Developed countries have yet to fully address the calls from developing countries for enhanced support in finance, technology and capacity building, without which they cannot green their economies and build adequate resilience to climate change. High-emitting countries did not send a clear enough signal that they are ready to improve their climate strategies and ramp up ambition through the Nationally Determined Contributions they will submit next year. At the same time, in the final decision texts, governments did express the need for more ambition by Parties and non-State actors alike, and they agreed to improve the ability of the most vulnerable to adapt to climate change. Many decisions that emerged from the conference in Madrid at least acknowledge the role of climate finance, essential for concrete action. And decisions were taken in areas including technology, oceans and agriculture, gender and capacity building. A large group of countries, regions, cities, businesses and investors signaled their intention to achieve net-zero CO2 emissions by 2050, as part of the Climate Ambition Alliance led by Chile. Also rallying under the Climate Ambition Alliance, 114 nations have meanwhile signaled their intention to submit an enhanced climate action plan next year. The caveat here is that not enough major economies have signaled that they are ready to shift the needle on climate ambition through improved plans. Next UN Climate Change Conference COP26 will be held in Glasgow in 2021.

- **Acknowledgement**
  The various data/information retrieved from a number of sources like Intergovernmental Panel on Climate Change (IPCC), Wikipedia, NABARD, Policy Papers of eminent scientists and from various institutional websites are duly acknowledged.

Reference

- Climate change-United Nations www.un.org.
- Ministry of Environment and Forests. www.inida.gov.in

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

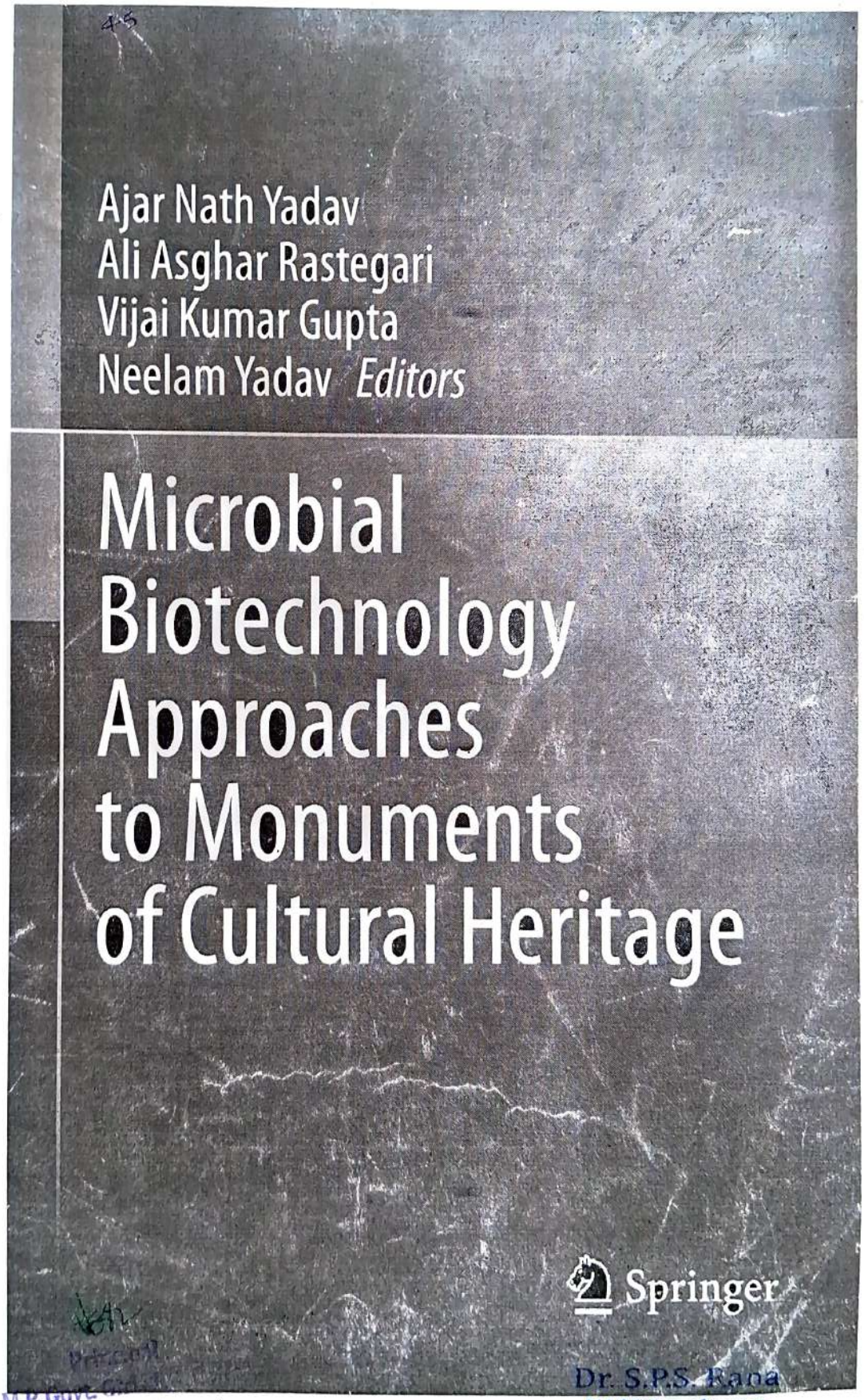

Ajar Nath Yadav
Ali Asghar Rastegari
Vijai Kumar Gupta
Neelam Yadav *Editors*

Microbial Biotechnology Approaches to Monuments of Cultural Heritage

Springer

Principal
S.M.P. Govt. Girls ...
Meerut

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

Microbial Community Present on the Reverse Side of a Deteriorated Canvas

1

Sushil Kumar, Priyanka, and Upendra Kumar

Abstract

Cultural heritage makes the foundation of any nation. Culture includes melodies, music, dance, theater, people conventions, performing expressions, ceremonies and customs, compositions, and artworks. Painting is a significant sort of art. Painting is the practice of applying paint, pigment, color, or other medium to a solid surface. Paintings are made on different kinds of supports like paper, pastel, parchment, canvas, walls, and roofs of monuments. Paintings on canvas need canvas as support, a preparatory layer of vegetal or animal glues, a paint layer that includes the pigment and its binder (most commonly used is linseed oil), and finally a layer of varnish to protect the pigment layer. Different layers are composed of many organic and inorganic compounds. Biodeterioration is the alteration of organic and inorganic materials induced by the metabolic activity and growth of microorganisms. Paintings on canvas are prone to biodeterioration. Biodeteriogens secrete an array of aggressive metabolic products, viz., organic and inorganic acids, as well as hydrolytic enzymes that degrade the substratum. Fungi and bacteria are the major causes of biodeterioration of canvas paintings. Some of the cellulolytic fungal genera that degrade the canvas support are reported to involve one or more species: *Aspergillus*, *Fusarium*, *Myrothecium*, *Memnoniella*, *Neurospora*, *Alternaria*, *Penicillium*, *Scopulariopsis*,

S. Kumar
Department of Botany, Shaheed Mangal Pandey Govt Girls PG College, Meerut, Uttar Pradesh, India

Priyanka
Department of Botany, Government Girls Degree College, Kharkhauda, Meerut, Uttar Pradesh, India

U. Kumar (✉)
Department of Molecular Biology, Biotechnology and Bioinformatics, College of Basic Sciences and Humanities, CCS Haryana Agricultural University, Hisar, Haryana, India

© Springer Nature Singapore Pte Ltd. 2020
A. N. Yadav et al. (eds.), *Microbial Biotechnology Approaches to Monuments of Cultural Heritage*, https://doi.org/10.1007/978-981-15-3401-0_1

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut

Radaelli A, Paganini M, Basavecchia V, Elli V, Neri M, Zanotto C (2004) Identification, molecular biotyping and ultrastructural studies of bacterial communities isolated from two damaged frescoes of St Damian's Monastery in Assisi. Lett Appl Microbiol 38:447–453

Ranalli G, Zanardini E, Sorlini C (2009) Biodeterioration—including cultural heritage. In: Schaechter M (ed) Encyclopedia of microbiology. Elsevier, Oxford, pp 191–205

Ravikumar HR, Rao SS, Karigar CS (2012) Biodegradation of paints: a current status. Indian J Sci Technol 5:1977–1987

Roldan M, Clavero E, Castel S, Hernandez-Marine M (2004) Biofilms fluorescence and image analysis in hypogean monuments research. Algologic Stud 111(1):127–143. https://doi.org/10.1127/1864-1318/2004/0111-0127

Rosado T, Silva M, Dias L, Candeias A, Gil M, Mirao J (2017) Microorganisms and the integrated conservation-intervention process of the renaissance mural paintings from Casas Pintadasin Evora—know to act, act to preserve. J King Saud Univ Sci 29:478–486

Rose AH (1981) Microbial biodeterioration. In: Economic microbiology. Academic Press, Ltd., London

Rubio RF, Bolivar FC (1997) Preliminary study on the biodeterioration of canvas paintings from the seventeenth century by *Microchiroptera*. Int Biodeterior Biodegrad 40:161–169

Saiz-Jimenez C (1993) Deposition of airborne organic pollutants on historic buildings. Atmos Environ 27:77–85

Salvador C, Bordalo R, Silva M, Rosado T, Candeias A, Caldeira AT (2017) On the conservation of easel paintings: evaluation of microbial contamination and artists materials. Appl Phys A Mater Sci Process 123:80

Sampa S, Luppi Mosca AM (1989) A study of the fungi occurring on 15th century frescoes in Florence, Italy. Int Biodeterior 25:343–353

Santos A, Cerrada A, Garcia S, San Andres M, Abrusci C, Marquina D (2009) Application of molecular techniques to the elucidation of the microbial community structure of antique paintings. Microb Ecol 58:692e702

Sassu G, Cappelletti F, Ghelfi B (2017) Carlo Bononi. L'ultimo sognatore dell'Officina ferrarese, 1st edn. Fondazione Ferrara Arte, Ferrara

Schabereiter-Gurtner C, Pinar G, Lubitz W, Rolleke S (2001) An advanced strategy to identify bacterial communities on art objects. J Microbiol Methods 45:77–87

Soffritti I, D'Accolti M, Lanzoni L, Volta A, Bisi M, Mazzacane S, Caselli E (2019) The potential use of microorganisms as restorative agents: an update. Sustainability 11:3853

Soliman NA, Knoll M, Abdel-Fattah YR, Schmid RD, Lange S (2007) Molecular cloning and characterization of thermo stable esterase and lipase from Geobacillus thermoleovorans YN isolated from desert soil in Egypt. Process Biochem 42:1090–1100

Souza-Egipsy V, Wierzchos J, Sancho C, Belmonte A, Ascaso C (2004) Role of biological soil crust cover in bioweathering and protection of sandstone in semi-arid landscape (Torrollones de Gabarda, Huesca, Spain). Earth Surf Process Land 29(13):1651–1661. https://doi.org/10.1002/esp.1118

Stulik D, Paint (2000) In: Taft WSJ, Mayer JW (eds) The science of paintings. Springer, New York, pp 12–25

Suihko ML, Alakom HL, Gorbushina A, Fortune I, Marquard J, Saarela M (2007) Characterization of aerobic bacterial and fungal microbiota on surfaces of historic Scottish monuments. Syst Appl Microbiol 30:494–508

Taft WSJ, Mayer JW (2000) The structure and analysis of paintings. In: Taft WSJ, Mayer JW (eds) The science of paintings. Springer, New York, pp 1–11

Tiano P (2002) Biodegradationof cultural heritage: decay mechanisms and control methods "9th ARIADNE Workshop" historic material and their diagnostic, ARCCHIP, Prague, 22–28 April 2002. http://www.arcchip.cz/w09/w09_tiano.pdf

Urzì C, Krumbein WE (1994) Microbiological impacts on the cultural heritage. In: Krumbein WE, Brimblecombe P, Cosgrove DE, Stainforth S (eds) Durability and change: The Science, Responsability and Cost of Sustaining Cultural Heritage. John Wiley & Son, Chichester, pp 107–135

Dr. S.P.S. Rana
NAAC Coordinator
S.M.P. Govt. Girls P.G. College
Meerut